Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

لَا یَبۡعَثُ اللّٰہُ مَنۡ یَّمُوۡتُ ؕ بَلٰی وَعۡدًا عَلَیۡہِ حَقًّا وَّ لٰکِنَّ اَکۡثَرَ النَّاسِ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ○

सूरः नह्ल, आयत : 39

अनुवाद : और अल्लाह उसे कभी दोबारा नहीं उठाएगा जो मर जाएगा। क्यों नहीं ! यह ऐसा वादा है जिसे पूरा करना उसके लिए आवश्यक है। लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते।

वर्ष- 9
अंक - 46
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

11जमादिउल अव्वल, 1446 हिज्री कमरी, 14 नबुव्वत 1403 हिज्री शम्सी, 14 नवंबर 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

ज़कात देना, और ज़रूरतमंदों को दूध पिलाना

{2633} हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके पास एक देहाती व्यक्ति आया। उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हिजरत (माइग्रेशन) के बारे में पूछा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "हिजरत का मामला बहुत मुश्किल है। क्या तुम्हारे पास कुछ ऊँट हैं?" उसने कहा, "हैं।" आप ने फ़रमाया, "क्या उनकी ज़कात देते हो?" उसने कहा, "हाँ, देता हूँ।" आपने फ़रमाया, "क्या किसी को दूध पीने के लिए जानवर देते हो?" उसने अर्ज़ किया, "जी हाँ।" फिर आपने फ़रमाया, "क्या इन ऊँटों को पानी पिलाने के दौरान दोहते हो और ज़रूरतमंदों को उनका दूध पिलाते हो?" उसने कहा, "जी हाँ।" तब आपने फ़रमाया, "फिर चाहे तुम समुंदरों के पार रहकर भी अच्छे कार्य करते रहो, तो अल्लाह तुम्हारे किसी भी अमल के सवाब में कोई कमी नहीं करेगा।"

खेती के लिए ज़मीन बिना किराए के देना

{2634} हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसी ज़मीन की तरफ़ गए जिसमें फ़सल लहलहा रही थी। आपने फ़रमाया, "यह ज़मीन किसकी है?" लोगों ने कहा कि यह अमुक व्यक्ति ने पट्टे पर ली हुई है। आपने फ़रमाया, "अगर ज़मीन का मालिक इसे उसे यूं ही दे देता, तो यह उसके लिए बेहतर होता बजाए इसके कि वह इस पर निश्चित किराया लेता।"

(सहीह अल् बुख़ारी, भाग 4, किताब अल्-हिबा)

★ ★ ★

लाखों पवित्र व्यक्तियों की गवाही मौजूद है और फिर उन्होंने अपने आचरण से यह सिद्ध कर दिया है और अपने दिल के ख़ून से यह गवाही लिख दी है कि ख़ुदा है और अवश्य है। इसके बावजूद यदि कोई इंकार करता है, तो वह मूर्ख है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यदि कोई यह शंका उठाए कि ख़ुदा नहीं है, तो यह बेहद बेहूदी बात है और इससे अधिक कोई नासमझी और मूर्खता नहीं हो सकती कि ख़ुदा का इंकार किया जाए। दुनिया में केवल दो गवाहों के कहने पर अदालत फ़ैसला सुना देती है। कुछ गवाहों की गवाही पर, जान जैसी कीमती चीज़ के खिलाफ अदालत फ़ैसला देकर फाँसी तक की सज़ा सुना देती है, जबकि गवाहियों में धोखाधड़ी और साजिश का संदेह ही नहीं, बल्कि पूरा यकीन भी होता है। लेकिन ख़ुदा के विषय में हजारों-लाखों ऐसे व्यक्तियों ने गवाही दी है जो अपनी जाति और देश में सत्यनिष्ठ और चरित्रवान माने जाते हैं, और फिर भी इसे पर्याप्त न समझा जाए, तो इससे बड़ी मूर्खता और हठधर्मी क्या होगी?

लाखों पवित्र व्यक्तियों की गवाही मौजूद है और उन्होंने अपने आचरण से यह सिद्ध कर दिया है और अपने दिल के ख़ून से यह गवाही लिख दी है कि ख़ुदा है और अवश्य है। इसके बावजूद यदि कोई इंकार करता है, तो वह मूर्ख है। और फिर यह अजीब बात है कि किसी मामले में राय देने के लिए उस विषय का ज्ञान होना आवश्यक है। जिस व्यक्ति को ज्ञान ही नहीं है, उसे राय देने का कोई अधिकार नहीं है। यदि वह राय देता है, तो क्या उसे मूर्ख और नासमझ नहीं कहा जाएगा? अवश्य ही कहा जाएगा, बल्कि अन्य समझदार लोग उसे लज्जित करेंगे कि "मूर्ख, जब तुझे कुछ जानकारी ही नहीं, तो फिर तू राय कैसे दे रहा है?" इसी प्रकार, जो लोग ख़ुदा के बारे में कहते हैं कि वह नहीं है, उन्हें यह राय देने का अधिकार कैसे है, जबकि उन्हें ख़ुदा के विषय में कोई ज्ञान ही नहीं है और उन्होंने कभी कोई आध्यात्मिक संघर्ष भी नहीं किया है।

शेष पृष्ठ 06 पर

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुब्बल बुत पर अपनी छड़ी मारी, जिस से वह गिर कर टूट गया। तब एक सहाबी ने अबू सुफ़ियान की ओर देखते हुए कहा, "अबू सुफ़ियान! क्या तुम्हें याद है कि अहद के दिन तुमने कितने घमंड में यह नारा लगाया था, 'उअ'लुल् हुबल, उअ'लुल् हुबल' (हुब्बल की महानता हो)।"

इलाही सिलसिलों की तरक्की में शैतान चाहे कितनी भी बाधाएँ डाले और कितनी भी योजनाएँ बनाए, अंततः अल्लाह के नबी ही विजयी होते हैं।

कुछ लोग आपत्ति करते हैं कि अल्लाह के लिए यह क्यों कहा गया कि वह मालिक है, क्यों यह नहीं कहा गया कि वह मलिक (बादशाह) है।

सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूरः अल्-हज की आयत 58-57 की तफ़सीर में फ़रमाया : "जब वह समय आएगा, तब उस दिन ख़ुदा की एकमात्र हुकूमत दुनिया में क़ायम हो जाएगी और शिर्क और कुफ़्र का अंत हो जाएगा। देखो, मक्का की विजय के बाद अल्लाह का वह घर, जिसे हज़रत इब्राहीम और उनके बेटे हज़रत इस्माईल ने अल्लाह की उपासना के लिए बनाया था, और जिसे उनकी गुमराह संतानों ने 360 बुतों से भर दिया था, किस प्रकार से उन बुतों से ख़ाली किया गया और हर बुत को टुकड़े-टुकड़े कर बाहर फेंक दिया गया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर बुत पर छड़ी मारते और कहते जाते थे :

جَآءَ الۡحَقُّ وَزَهَقَ الۡبَاطِلُ اِنَّ الۡبَاطِلَ کَانَ زَهُوۡقًا ۔

'जा'अल-हक़्क़ु वज़-ज़हक़ल-बातिल, इन्नल बातिल काना ज़हूका'

(अर्थात सत्य आ गया और असत्य मिट गया, और असत्य तो मिटने वाला ही है)। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सबसे बड़े बुत हुब्बल पर अपनी छड़ी मारी और वह गिरकर टूट गया, तब एक सहाबी ने अबू सुफ़ियान की ओर देखते हुए कहा, 'अबू सुफ़ियान! क्या तुम्हें याद है कि उहुद के दिन तुमने घमंड में कहा था, 'उअ'लुल् हुबल, उअ'लुल् हुबल' (हुबल की महिमा हो)। आज देख लो, तुम्हारी आँखों के सामने हुबल के टुकड़े बिखरे हुए हैं।' अबू सुफ़ियान शर्मिंदा हो कर बोला, 'भाई, इन बातों को छोड़ दो। यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ुदा के

शेष पृष्ठ पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

اَللّٰھُمَّ مُنْزِلَ الْکِتَابِ سَرِیْعَ الْحِسَابِ اِھْزِمِ الْاَحْزَابَ. اَللّٰھُمَّ اِھْزِمْھُمْ وَانْصُرْنَا عَلَیْھِمْ۔

"हे अल्लाह! किताब को उतारने वाले!!! जल्दी हिसाब लेने वाले!!! तू दुश्मनों को पराजित कर दे। हे अल्लाह! उन्हें पराजित कर और उनके खिलाफ हमारी मदद कर।"

"एक दिन हमले इतने अधिक हो गए कि कुछ मुसलमान अपनी नमाज़ें समय पर अदा नहीं कर पाए। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इतना दुख हुआ कि आपने फ़रमाया: 'ख़ुदा काफिरों को सज़ा दे कि उन्होंने हमारी नमाज़ें खराब कर दीं।' इससे हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अख़लाक (चरित्र) पर एक महान रौशनी पड़ती है, और यह पता चलता है कि दुनिया में सबसे अज़ीज़ चीज़ आपके लिए अल्लाह की इबादत थी।"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

"इन खतरनाक दिनों में भी मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पांचों नमाज़ें अपने समय पर अदा करते थे। और अगर एक दिन दुश्मनों के गंभीर हमलों के कारण आप अपने रब का नाम इत्मीनान और सुकून से समय पर नहीं ले सके तो आपको बहुत तकलीफ हुई।"

हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि "जब मैं काफिरों की फौज का हाल जानने के लिए निकला, तो मैंने पाया कि मेरे शरीर पर ठंड का नामो-निशान तक नहीं था। बल्कि मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं एक गर्म हमाम (स्नानघर) से गुज़र रहा हूं, और मेरी घबराहट पूरी तरह से दूर हो गई।"

काफिरों के भागने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और फ़रमाया, "यह हमारी किसी कोशिश या ताकत का नतीजा नहीं है, बल्कि केवल अल्लाह के फज़्ल की वजह से है, जिसने अपने दम से दुश्मनों को पीछे धकेल दिया।"

"जैसा कि आप जानते हैं, दुनिया के हालात दिन-ब-दिन खराब होते जा रहे हैं और विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। अमेरिका और अन्य बड़ी ताकतें इंसाफ से काम नहीं लेना चाहतीं। युद्ध का विस्तार बढ़ता जा रहा है। अल्लाह तआला अहमदियों और मासूमों को इसके भयानक और बुरे प्रभावों से बचाए। इसके लिए हमें अल्लाह तआला से अपने रिश्ते को मज़बूत करना होगा और दुआओं की ओर अधिक ध्यान देना होगा। हर अहमदी को इस ओर ध्यान देना चाहिए।"

"पाकिस्तान में अहमदियों की स्थिति भी बहुत खराब हो रही है। उनके लिए भी दुआ करें।"

"बांग्लादेश के अहमदियों की हालत के लिए भी दुआ करें। उन पर भी बहुत सख्तियाँ हैं। अल्लाह तआला सब पर रहम और फज़्ल फ़रमाए।"

ग़ज़वा-ए-ख़ंदक के संदर्भ में सीरत-ए-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वर्णन
साथ ही दुनिया के हालात और पाकिस्तान एवं बांग्लादेश के अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 04 अक्टूबर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आजकल खुत्बात (उपदेशों) में ग़ज़वा-ए-अहज़ाब का वर्णन हो रहा है। युद्ध की और अधिक तफसील इस प्रकार है कि जब मुशरिकों (मक्के के बहुदेववादियों) को खंदक (खाई) पार करने के बावजूद कोई सफलता नहीं मिली, बल्कि उन्हें हार का सामना करना पड़ा, तो उन्होंने यह तय किया कि सब मिलकर सुबह हमला करेंगे और कोई पीछे नहीं रहेगा। सारी रात वे तैयारी में लगे रहे और सूरज निकलने से पहले ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने खंदक पर पहुँच गए। मुशरिकों ने हर तरफ से खंदक को घेर लिया और एक सेना ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ेमे की ओर रुख किया, जिसमें ख़ालिद बिन वलीद भी शामिल थे। उन्होंने बार-बार खंदक को पार करने की कोशिश की और तीखे तीरों की वर्षा की। काफिर लगातार मुसलमानों की ओर से किसी भी चूक के इंतेज़ार में रहे ताकि मौका मिले तो खंदक पार कर लें। ये हमले और कोशिशें रुक-रुक कर होती रहीं।

इसी मौके पर वाहीशी बिन हरब ने तुफैल बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हु (कुछ के अनुसार तुफैल बिन मालिक बिन नुमान अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु) पर हमला किया और उन्हें छोटे भाले से शहीद कर दिया। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को भी एक तीर लगा, जिससे वह घायल हो गए, और कुछ दिनों बाद इसी चोट के कारण उनकी शहादत हुई।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, खंड 4, पृष्ठ 380, दारुल किताब अल-इल्मिया, बेरूत)

(सीरत एन्साइक्लोपीडिया, खंड 7, पृष्ठ 345, दारुस्सलाम)

यही वह दिन था जब मुसलमानों के लिए समय पर नमाज़ पढ़ना भी कठिन हो गया। इस दिन की लगातार व्यस्तता और बार-बार होने वाले हमलों के कारण वर्णन किए गए वाकये बताते हैं कि बाद के रावी (कथावाचक) इन बातों को सही ढंग से संजोकर नहीं रख सके, और कुछ समय बाद यह बात फैल गई कि इस दिन मुसलमान नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ न तो ज़ुहर (दोपहर की नमाज़) अदा कर सके और न अस्र (दोपहर बाद की नमाज़), यहाँ तक कि सूरज डूब गया। और ये नमाजें सूरज डूबने के बाद अदा की गईं। अक्सर एक किस्सा यह भी वर्णन किया जाता है।

कुछ इतिहासकारों ने तो यहाँ तक बढ़ा-चढ़ाकर कहा कि अल्लाह ने डूबे हुए सूरज को वापस भेजा ताकि मुसलमान ज़ुहर और अस्र की नमाज़ अदा कर सकें, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि वह दिन अत्यंत कठिन था। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समेत सभी मुसलमान लगातार हमलों का सामना कर रहे थे, लेकिन ऐसा भी नहीं था कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनके साथियों ने कोई नमाज़ अदा न की हो। दिन बहुत कठिन था, परंतु इतना भी नहीं कि बिल्कुल नमाजें न पढ़ी जा सकीं। उस दिन भी नमाजें अदा की गईं, लेकिन लगातार डर और परेशानी के माहौल में। ऐसा मालूम होता है कि अस्र के समय हमलों में इतनी अधिक तेजी आई कि अस्र की नमाज़ अदा करने में मुश्किल पेश आई होगी और वह संकुचित समय में अदा की गई होगी।

सीरत ख़ातम-उन-नबीयीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसे इस तरह वर्णन किया है कि "उस दिन मुसलमानों की सभी नमाज़ें समय पर अदा नहीं हो सकीं, यह सही नहीं है।" ऐसा कहा जाता है कि नमाज़ें अदा नहीं हो सकीं, यह सही नहीं है, "बल्कि जैसा कि सही रिवायतों (प्रामाणिक कथाओं) से साबित होता है, मामला सिर्फ़ इतना था कि चूंकि उस समय तक सलात-ए-ख़ौफ़ (ख़ौफ़ के समय की नमाज़) शुरू नहीं हुई थी, इसलिए लगातार ख़तरे और व्यस्तता के कारण सिर्फ़ एक नमाज़, यानी अस्र (दोपहर बाद) बेवक्त हो गई थी, जो मगरिब (शाम की नमाज़) के साथ मिलाकर पढ़ी गई। और कुछ रिवायतों के अनुसार केवल ज़ुहर (दोपहर) और अस्र की नमाज़ें बेवक्त पढ़ी गई थीं।"

(*सीरत ख़ातम-उन-नबीयीन* हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, एम.ए., पृष्ठ 588)

हज़रत मिर्ज़ा बशीरउद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इसे बयान किया है। उन्होंने लिखा है:

"एक दिन हमला इतना ज़्यादा बढ़ गया कि मुसलमानों की कुछ नमाज़ें समय पर अदा नहीं हो सकीं। इससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इतनी तकलीफ़ हुई कि आपने कहा : अल्लाह काफ़िरों को सज़ा दे, उन्होंने हमारी नमाज़ों को ज़ाया कर दिया...इससे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अख़लाक़ (चरित्र) पर बहुत बड़ी रौशनी पड़ती है और यह मालूम होता है कि दुनिया में आपके लिए सबसे प्यारी चीज़ अल्लाह की इबादत (उपासना) थी। जब दुश्मनों ने हर तरफ़ से मदीना को घेर रखा था, मदीना के मर्द औरतें और बच्चों की जानें ख़तरे में थीं, जब मदीना के लोगों के दिल हर पल दुश्मन के हमले की दहशत में धड़क रहे थे, तब भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यही चाहत थी कि अल्लाह की इबादत समय पर और अच्छे तरीके से अदा हो जाए।" यानी कि भय के इस माहौल में भी आपकी सबसे बड़ी इच्छा यही थी कि इबादत में कोई कमी न रह जाए। "मुसलमानों की इबादत यहूदियों, ईसाइयों और हिंदुओं की तरह हफ़्ते में किसी एक दिन तक सीमित नहीं है, बल्कि मुसलमानों की इबादत दिन और रात में पाँच बार होती है। ऐसे ख़तरनाक समय में एक बार नमाज़ पढ़ना भी मुश्किल हो सकता है, तो पाँच बार और फिर अच्छी तरह जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना और भी कठिन है। परंतु इन ख़तरनाक दिनों में भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ये पाँचों नमाज़ें समय पर अदा करते थे, और अगर एक दिन दुश्मनों के अत्यंत कड़े हमले के कारण आप अपने रब का नाम सुकून और आराम से समय पर न ले सके, तो आपको बेहद तकलीफ़ महसूस हुई।"

(*दीबाचा तफ़्सीर अल-क़ुरआन*, अनवारुल-उलूम, खंड 20, पृष्ठ 273-274)

इस दौर के हाकिम और अदल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन तमाम रिवायतों को जिनमें इन नमाज़ों को रात में अदा करने का ज़िक्र है, कमज़ोर बताते हुए सिर्फ़ एक रिवायत को सही ठहराया है जिसमें अस्र की नमाज़ तंग वक्त में पढ़ने का उल्लेख है।

इसलिए, ग़ज़वा-ए-खंदक के दौरान चार नमाज़ों की क़ज़ा (छूटने) पर एक पादरी के ऐतराज़ का जवाब देते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "रहा यह सवाल कि खंदक खोदने के समय चार नमाज़ें इकट्ठी की गईं, इस मूर्खतापूर्ण भ्रम का जवाब यह है कि अल्लाह फ़रमाता है कि दीन में कोई ऐसी कठिनाई नहीं है जो इंसान के लिए मुसीबत का कारण बने। इसलिए उसने ज़रूरत और मुसीबत के समय में नमाज़ों को मिलाकर पढ़ने और क़सर (संक्षिप्त) करने का आदेश दिया है, लेकिन इस मामले में किसी भी भरोसेमंद हदीस में चार नमाज़ें इकट्ठी करने का ज़िक्र नहीं है।" यह सही है कि ऐसा हो सकता है, लेकिन कहीं भी किसी भरोसेमंद हदीस में यह नहीं बताया गया है कि चार नमाज़ें इकट्ठी पढ़ी गईं। "बल्कि *फत्ह-उल-बारी, शरह सहीह बुख़ारी* में लिखा है कि मामला सिर्फ़ इतना हुआ था कि एक नमाज़, अर्थात अस्र, तंग वक्त में अदा की गई।"

आप फ़रमाते हैं कि "अगर तुम इस समय हमारे सामने होते तो हम तुमसे ज़रा बैठकर पूछते कि यह किस स्रोत से लिया गया है।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने विरोधियों को संबोधित करते हुए कहा, "अगर तुम मेरे सामने होते तो मैं तुमसे पूछता कि यह रिवायत कहाँ से लाई है।" आप फ़रमाते हैं, "क्या यह सर्वमान्य रिवायत है कि चार नमाज़ें छूट गई थीं। चार नमाज़ें तो शरई (शरीयत) नियमों के अनुसार एकत्र की जा सकती हैं, यानी ज़ुहर और अस्र, और मगरिब और इशा। हाँ, एक कमजोर रिवायत में ज़ुहर, अस्र, मगरिब और इशा को एकत्र करने का ज़िक्र है, लेकिन अन्य प्रामाणिक हदीसें इसे अस्वीकार करती हैं और यही साबित होता है कि अस्र तंग वक्त में अदा की गई थी।"

(*नूरुल क़ुरआन*, खंड 2, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 9, पृष्ठ 390)

ख़ैर, यह स्पष्ट है कि पूरे दिन की सभी नमाज़ें इकट्ठी नहीं की गई थीं, बल्कि अस्र की नमाज़ तंग समय में पढ़ी गई थी। इसमें थोड़ा ही समय था, और इस बात का भी अफ़सोस अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहोअलैहि व सल्लमको हुआ कि नमाज़ आराम से सही तरीके से अदा नहीं की जा सकी।

जंग-ए-अहज़ाब (अहज़ाब की लड़ाई) का वर्णन करते हुए आगे लिखा है कि खंदक की लड़ाई मुसलमानों के लिए एक कठिन और तनावपूर्ण परीक्षा थी। जंगी भय के अलावा, भूख और मौसम की कठोरता भी चरम पर थी। कई-कई बार भूखे रहना पड़ रहा था। इस दौरान एक अदृश्य मदद मिली कि मुसलमानों का एक सशस्त्र दल, जो अपने एक रिश्तेदार की अंतिम संस्कार के लिए जा रहा था, उसे बीस ऊँट मिले, जिन पर अनाज लदा हुआ था और जो बनू क़ुरैज़ा द्वारा मक्का के क़ुरैश के लिए भेजा जा रहा था। ये राशन हुय्यी बिन अख़तब की सिफारिश और विशेष प्रयास से भेजा जा रहा था। एक छोटी-सी झड़प के बाद इन ऊँटों को मुसलमानों ने अपने क़ब्ज़े में ले लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में पेश किया। अहले-ख़ंदक ने इससे खाया, कुछ ऊँट ज़बीहा किए, और बचे हुए ऊँटों को युद्ध के अंत में मदीना ले गए। जब क़ुरैशी सेनापति अबू सुफ़यान को यह ख़बर मिली, तो उसने कहा, “हुय्यी हमारे लिए कितना अशुभ साबित हुआ है! अब जब हम लौटेंगे, तो हमारे पास अपने सामान को लादने के लिए कोई जानवर भी नहीं होगा।” (*सबुलुल् हुदा वाल-रिशाद*, खंड 4, पृष्ठ 382, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)। युद्ध के दौरान यह पूरी तरह से जायज़ था, क्योंकि दुश्मनों ने मदीना को चारों ओर से घेर रखा था। अगर मुसलमानों ने उनके राशन पर कब्जा किया, तो यह बिल्कुल जायज़ था।

अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहोअलैहि व सल्लम के द्वारा अहज़ाब के ख़िलाफ़ बद्दुआ करने का भी उल्लेख मिलता है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहोअलैहि व सल्लम सोमवार, मंगलवार, और बुधवार को ज़ुहर और अस्र के बीच आए और अपनी चादर ओढ़कर खड़े हो गए और हाथ उठाकर अहज़ाब के खिलाफ़ बद्दुआ की। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हमने आपके चेहरे पर ख़ुशी को महसूस किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबई बिन औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहोअलैहि व सल्लमने अहज़ाब पर बद्दुआ की। अबू नुईम ने इसमें यह भी जोड़ा है कि आपने सूरज के ज़वाल का इंतेज़ार किया, फिर लोगों में खड़े होकर फ़रमाया, "हे लोगो! दुश्मन से मुठभेड़ की इच्छा न करो, अल्लाह से सलामती मांगो। लेकिन अगर तुम्हारा सामना दुश्मन से हो जाए, तो सब्र करो और जान लो कि जन्नत तलवारों के सायों के नीचे है।"

اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتٰبِ سَرِيْعَ الْحِسَابِ اِهْزِمِ الْاَحْزَابَ، اَللّٰهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَانْصُرْنَا عَلَيْهِمْ۔

फिर फ़रमाया: "अल्लाहुम्मा, मुनज़िल अल-किताब, सरीअ अल-हिसाब, अहज़ाब को हरा दे। हे अल्लाह! उन्हें हरा दे और उनके खिलाफ हमारी मदद कर।"

एक रिवायत में यह दुआ भी दर्ज है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ أَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ، اَللّٰهُمَّ اِنْ تَشَأْ لَا تُعْبَدْ۔

"अल्लाहुम्मा इन्नी अंशुदुका अहदका व वअदका, अल्लाहुम्मा, इन तशा लातुबद।"

अर्थात्, "हे अल्लाह! मैं तुझसे तेरे अहद (वचन) और वादा (प्रतिज्ञा) का वास्ता देता हूँ। हे अल्लाह! यदि तू चाहे तो तेरी यह इबादत न की जाए।"

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हमने अर्ज़ किया: "हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हमारा कलेजा मुँह को आ गया है, बहुत मुश्किल हालत हो गई है। क्या हमारे लिए कुछ क़लमात हैं या ऐसी कोई दुआ है जिसे हम पढ़ें?" आपने फ़रमाया, "हाँ, यह कहो :

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَآمِنْ رَوْعَاتِنَا۔

अल्लाहुम्मा, इस्तुर अउरातिना वा आमिन रौआतिना

(अर्थात् 'हे अल्लाह, हमारे ऐबों को छुपा ले और हमारे खौफ को दूर कर दे।')"

हज़रत मसीह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस बारे में वर्णन किया है कि "कुछ मुसलमान घबरा कर अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहोअलैहि व सल्लम के पास आए और अर्ज़ किया, 'हे रसूलुल्लाह! हालात बहुत खतरनाक हो गए हैं। अब मदीना के बचने की कोई उम्मीद नहीं दिखती। आप इस वक़्त ख़ुदा से ख़ास दुआ करें और हमें भी कोई दुआ सिखाएँ, जिससे ख़ुदा का फ़ज़्ल हम पर नाज़िल हो।' आपने फ़रमाया, 'तुम लोग घबराओ नहीं, अल्लाह से दुआ करो कि वह तुम्हारी कमज़ोरियों

पर पर्दा डाले, तुम्हारे दिलों को मज़बूत करे और तुम्हारी घबराहट दूर करे।' फिर आपने ख़ुद भी इस तरह दुआ फ़रमाई :

اَللّٰھُمَّ مُنْزِلَ الْکِتٰبِ سَرِیْعَ الْحِسَابِ اِھْزِمِ الْاَحْزَابَ اَللّٰھُمَّ اھْزِمْھُمْ وَزَلْزِلْھُمْ۔

अल्लाहुम्मा, मुनज़िल अल-किताब, सरीअ अल-हिसाब, अहज़ाब को हरा दे। अल्लाहुम्मा, अहज़ाब को हरा दे और उन्हें कंपा दे।

और इस तरह की दुआ भी फ़रमाई:

یَا صَرِیْخَ الْمَکْرُوْبِیْنَ یَا مُجِیْبَ الْمُضْطَرِّیْنَ
اِکْشِفْ ھَمِّیْ وَغَمِّیْ وَکَرْبِیْ
فَاِنَّکَ تَرٰی مَا نَزَلَ بِیْ وَبِاَصْحَابِیْ۔

या सरीख अल-मकरुबीन, या मुजीब अल-मुद्तरिन, अक्शिफ हम्मी वा ग़म्मी वा करबी फइनका तारा मा नज़ल बी वा बिअस्हाबी।

अर्थात, 'हे अल्लाह, जिसने मुझ पर क़ुरआन उतारा है, जो जल्दी हिसाब लेने वाला है, इन दुश्मन के गिरोहों को हार दे। हे अल्लाह, मैं फिर अर्ज़ करता हूँ कि तू उन्हें हार दे, और हमें उन पर ग़ालिब कर दे और उनके इरादों को डगमगा दे। हे घबराहट में पड़े लोगों की पुकार का जवाब देने वाले और तकलीफ़ में पड़े लोगों की दुआ सुनने वाले!'

इस दुआ का अर्थ है, 'हे तकलीफ़ में पड़े लोगों की पुकार सुनने वाले, घबराहट में पड़े लोगों की मदद करने वाले, मेरे ग़म और घबराहट को दूर कर दे, क्योंकि तू उन मुसीबतों को जानता है जो मुझ पर और मेरे साथियों पर आई हैं।'

(*दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन*, *अनवारुल उलूम*, खंड 20, पृष्ठ 275)

इतिहास में लिखा है कि जंग इसी तरह अपने चरम पर पहुँच चुकी थी और मक्का के क़ुरैश और उनके साथी क़बीलों का लम्बा घेराव अब उन्हें थका चुका था। वे जल्द से जल्द मुसलमानों का अंत करना चाहते थे क्योंकि युद्ध के दृष्टिकोण से मुसलमान चारों ओर से घिरे हुए थे और उनके साथी क़बीले जैसे कि बनू क़ुरैज़ा मदीना के भीतर ही थे। ये सभी चीज़ें काफ़िरों की उम्मीदों और हौसलों को बढ़ा रही थीं, और अब वे चाहते थे कि सब मिलकर एक ही हमला करें और मदीना को पूरी तरह तबाह कर दें।

काफ़िरों के सरदार इस रणनीति को बना रहे थे, जैसे कि कहा जाता है, *तदबीर कुनद बंदा* (अर्थात इंसान योजना बनाता है), और दूसरी तरफ अल्लाह की तदबीर इस पर मुस्कुरा रही थी, जैसे कहा गया है, *तदबीर कुनद खंदा* कि देखो, मैं तुमसे क्या करने वाली हूँ।

इस घटना का विवरण करते हुए *सीरत ख़ातमन नबिय्यीन* में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है:

"एक व्यक्ति, नुआईम बिन मसऊद, जो क़बीला ग़तफ़ान की शाख़ क़बीला अशजअ से संबंध रखता था और इस युद्ध में मुसलमानों के खिलाफ लड़ रहा था, मदीना पहुँचा। वह दिल से मुसलमान हो चुका था, लेकिन अभी तक काफ़िरों को उसके मुसलमान होने की ख़बर नहीं थी। उसने इस स्थिति का लाभ उठाते हुए बेहद चतुराई से ऐसी योजना अपनाई जिससे काफ़िरों के बीच फूट पड़ गई। सबसे पहले नुआईम बिन मसऊद क़बीला बनू क़ुरैज़ा के पास गया और, उनके साथ पुराने संबंधों का फायदा उठाते हुए, उनके सरदारों से कहा, 'मुझे लगता है कि आपने सही नहीं किया जो मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके साथ ग़द्दारी करके क़ुरैश और ग़तफ़ान के साथ मिल गए हो। क़ुरैश और ग़तफ़ान तो यहाँ मदीना में कुछ दिनों के ही मेहमान हैं, लेकिन तुम्हें हर हाल में यहीं रहना है क्योंकि यही तुम्हारा वतन है और तुम्हें यहाँ मुसलमानों के साथ ही रहना होगा। याद रखो, जब क़ुरैश और ग़तफ़ान यहाँ से जाएंगे, तो तुम्हारा कोई ख़्याल नहीं करेंगे और तुम्हें यूं ही मुसलमानों के रहम पर छोड़ देंगे। इसलिए, कम से कम तुम उनसे यह कहो कि वे अपने कुछ आदमियों को तुम्हारे पास गारंटी के तौर पर छोड़ दें, ताकि तुम्हें यह भरोसा रहे कि वे तुम्हारे साथ कोई ग़द्दारी नहीं करेंगे।'

बनू क़ुरैज़ा के सरदारों को नुआईम की यह बात समझ आ गई और वे क़ुरैश से बंधकों की मांग करने के लिए तैयार हो गए ताकि बाद में किसी मुसीबत का सामना न करना पड़े। इसके बाद, नुआईम बिन मसऊद क़ुरैश के सरदारों के पास गया और उनसे कहा कि बनू क़ुरैज़ा को यह डर है कि कहीं तुम्हारे यहाँ से चले जाने के बाद उन्हें किसी संकट का सामना न करना पड़े। इसलिए वे तुम्हारे इस गठबंधन में असमंजस में हैं और वे गारंटी के तौर पर तुमसे कुछ बंधकों की मांग कर सकते हैं। लेकिन तुम हरगिज़ उन्हें बंधक मत देना, कहीं ऐसा न हो कि वे तुमसे ग़द्दारी करके तुम्हारे बंधकों को मुसलमानों के हवाले कर दें।

इसी तरह, नुआईम ने अपने क़बीले ग़तफ़ान के पास जाकर भी इसी प्रकार की बातें कहीं। अब अल्लाह की तरफ से ऐसा संयोग हुआ कि क़ुरैश और ग़तफ़ान पहले से ही यह योजना बना रहे थे कि मुसलमानों पर एक संयुक्त हमला किया जाए, और यह हमला चारों दिशाओं से एक साथ किया जाए, ताकि मुसलमान अपनी संख्या की कमी के कारण इसका सामना न कर सकें और कहीं न कहीं से उनकी पंक्ति टूट जाए। इस इरादे से उन्होंने बनू क़ुरैज़ा को संदेश भेजा कि 'घेरा लंबा हो रहा है और लोग थक चुके हैं। इसलिए हमने यह तय किया है कि कल सभी क़बीलों केसाथ मिल कर मुसलमानों पर एक संयुक्त हमला किया जाएगा। इसलिए तुम भी कल के हमले के लिए तैयार हो जाओ।'

बनू क़ुरैज़ा, जिनसे पहले ही नुआईम बिन मसऊद ने बात की थी, ने जवाब दिया कि 'कल हमारा सब्त (विश्राम का दिन) है, इसलिए हम इस हमले में भाग लेने से मना करते हैं। और वैसे भी जब तक तुम हमें गारंटी के तौर पर अपने कुछ आदमियों को हमारे पास नहीं छोड़ते, ताकि यह सुनिश्चित हो कि तुम बाद में हमारे साथ ग़द्दारी नहीं करोगे, हम इस हमले में शामिल नहीं हो सकते।' क़ुरैश और ग़तफ़ान, जब उन्हें बनू क़ुरैज़ा का यह जवाब मिला, तो हैरान रह गए और कहने लगे कि वास्तव में नुआईम ने सच कहा था कि बनू क़ुरैज़ा हमारी ग़द्दारी पर उतारू हैं। दूसरी तरफ, जब बनू क़ुरैज़ा को क़ुरैश और ग़तफ़ान का यह जवाब मिला कि वे बंधक नहीं देंगे, तो उन्होंने कहा कि सच में नुआईम ने हमें सही सलाह दी थी कि क़ुरैश और ग़तफ़ान का इरादा नेक नहीं है।

इस प्रकार नुआईम की बुद्धिमानी से काफ़िरों के शिविर में संदेह और विभाजन की स्थिति पैदा हो गई। दोनों पक्ष एक-दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखने लगे।"

"यह वही योजना थी जो नुआईम ने अपनाई, लेकिन नुआईम की यह विशेषता थी कि उसने इस नाज़ुक मिशन को पूरा करते समय अपनी बातों में सीधे तौर पर किसी झूठ का सहारा नहीं लिया। उसने केवल चतुराई से एक योजना अपनाई जिससे वह दुश्मनों के षड्यंत्र से बचने में सफल रहा। यह रणनीति एक प्रकार की युद्धकला का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य अत्याचारी दुश्मन को हताश करना और अनावश्यक खून-खराबे को रोकने में अत्यधिक सहायता ली जा सकती है।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 591-593)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया कि "कुछ दिन बाद दोनों पक्षों ने यह तय किया कि एक निश्चित समय पर यहूदी और मुश्रिकों की फौजें एक साथ मुसलमानों पर हमला करेंगी। लेकिन इस समय अल्लाह तआला की मदद एक अनोखे तरीके से प्रकट हुई। इसका विवरण यह है कि नु'इम नाम का एक व्यक्ति जो क़बीला ग़तफ़ान से था, दिल से मुसलमान हो चुका था। यह व्यक्ति भी काफिरों के साथ आया था, लेकिन वह इस इंतेज़ार में था कि अगर मुझे कोई मौका मिले, तो मैं मुसलमानों की मदद करूं। एक अकेला इंसान क्या कर सकता है, लेकिन जब उसने देखा कि यहूदी भी काफिरों के साथ मिल गए हैं और अब मुसलमानों की सुरक्षा का कोई ज़रिया नहीं दिखाई दे रहा, तो वह इन हालात से इतना प्रभावित हुआ कि उसने तय कर लिया कि उसे इस फितने को खत्म करने के लिए कुछ न कुछ करना चाहिए।

चूंकि यह तय हुआ कि दोनों पक्ष एक साथ एक दिन हमला करेंगे, वह बनू क़ुरैज़ा के पास गया और उनके सरदारों से कहा, 'अगर अरबों की फौज भाग जाए, तो बताओ मुसलमान तुम्हारे साथ क्या करेंगे? तुम मुसलमानों के साथ संधि कर चुके हो, और संधि तोड़ने के परिणाम में तुम्हें जो सज़ा मिलेगी, उसका अनुमान लगा लो।' उनके दिल कुछ डरे और उन्होंने पूछा, 'फिर हम क्या करें?' नु'इम ने कहा, 'जब अरब तुमसे संयुक्त हमले की इच्छा करें, तो तुम मुश्रिकों से मांग करो कि अपने सत्तर आदमी हमारे पास यरगमाल के तौर पर भेज दो। वे हमारे किलों की सुरक्षा करेंगे और हम मदीना के पीछे से उन पर हमला कर देंगे।'"

"फिर वह वहाँ से हटकर मुश्रिकों के सरदारों के पास गया और उनसे कहा, 'यह यहूदी तो मदीना के निवासी हैं। अगर मौके पर ये तुमसे गद्दारी करें, तो तुम क्या करोगे? अगर ये मुसलमानों को खुश करने के लिए और अपने अपराध को माफ करवाने के लिए तुमसे तुम्हारे आदमी यरगमाल (किसी के कब्जे में होना) मांगें और उन्हें मुसलमानों के हवाले कर दें, तो फिर तुम क्या करोगे? तुम्हें चाहिए कि उनका इम्तिहान लो कि क्या वे पक्के रहते हैं या नहीं और जल्द ही उन्हें अपने साथ मिलकर नियमित हमले की दावत दो।'

काफिरों के सरदारों ने इस सलाह को सही समझते हुए अगले दिन यहूदियों को संदेश भेजा कि हम एक सामूहिक हमला करना चाहते हैं, तुम भी अपनी फौजों के साथ कल हमला करो। बनू क़ुरैज़ा ने कहा, 'पहले तो कल हमारा सब्त का दिन है' और 'सब्त के दिन हम हमला नहीं करते,' 'इसलिए हम उस दिन लड़ाई नहीं कर सकते। दूसरे, हम

मदीना के निवासी हैं और तुम बाहर के। अगर तुम लोग लड़ाई छोड़कर चले जाओ, तो हमारा क्या बनेगा? इसलिए तुम लोग हमें सत्तर आदमी यरगमाल (किसी के कब्जे में होना) के तौर पर दो, तब हम लड़ाई में शामिल होंगे।'

काफिरों के दिल में पहले से ही संदेह पैदा हो चुका था, उन्होंने इस मांग को पूरा करने से इंकार कर दिया और कहा, 'अगर तुम्हारा हमारे साथ संघ सच्चा था, तो इस प्रकार के मांग का कोई मतलब नहीं है।' इस घटना से यहूदियों के दिलों में संदेह पैदा होने लगा और इसी तरह काफिरों के दिलों में भी संदेह उत्पन्न होने लगा, और जैसे कि सामान्य नियम है, जब संदेह दिल में उत्पन्न होते हैं तो बहादुरी की भावना भी समाप्त हो जाती है।"

(दीबाचह तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 280-281)

फिर अल्लाह तआला की क़ुदरत एक रात मुसलमानों के हक में तेज़ आंधी की शक्ल में प्रकट हुई, जिसके कारण अहज़ाब या विभिन्न क़बीले, मुश्रिकों, हमलावरों को भागना पड़ा। इसकी जानकारी में लिखा गया है और इब्न इसहाक ने इसे इस प्रकार बयान किया है कि अल्लाह तआला ने एक कठोर ठंडी रात में इतनी तेज़ आंधी भेजी कि उसने काफिरों के बर्तनों को पलट दिया और बर्तन फेंक दिए। बलाज़री ने लिखा है, "फिर अल्लाह तआला ने काफिरों के खिलाफ मुसलमानों की आंधी के माध्यम से मदद की। यह पीली आंधी थी, जिसने उनकी आँखों को भर दिया। इसने उनमें कमज़ोरी और बिदली घुसेड़ दी और मुश्रिकों ने पीछे हटकर अपने ठिकाने को छोड़ दिया। हवा उन पर चलती रही और उन्हें फ़रिश्तों ने ढक लिया। उनकी आँखों को फोड़ दिया, तो वे लौट गए।"

(सब्लुल् हुदा वल् इर्शाद, भाग 4, पृष्ठ 386-387, दारुल किताब अल-इल्मिया, बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस घटना का विवरण इस प्रकार पेश किया है कि "संभव है कि नु'इम बिन मसूद की इस शांति प्रिय कोशिश का परिणाम नष्ट हो जाता और एक अस्थायी चूक और हलचल के बाद काफिरों में फिर से एकता और स्थिरता की भावना पैदा हो जाती। लेकिन अल्लाह की ओर से ऐसा संयोग हुआ कि इन घटनाओं के बाद रात को एक बेहद तेज आंधी चली, जिसने काफिरों के विशाल कैंप में, जो एक खुले स्थान में स्थित था, एक भयानक तूफान मचाया। तंबू उखड़ गए, छतों के पर्दे टूटकर उड़ गए, बर्तन पलटकर चूल्हों में गिर गए, और रेत और कंकड़ की बारिश ने लोगों के कानों, आँखों और नथुनों को भर दिया।

और फिर सबसे बढ़कर यह हुआ कि वे सामूहिक आगें, जिन्हें अरब के पुराने रिवाज के अनुसार रात में बहुत ही सख्ती से जलाया जाता था, इधर-उधर घास-फूस की तरह उड़कर बुझने लगीं।" इन आगों पर उनका बड़ा विश्वास था कि ये नहीं बुझेंगी। "इन दृश्यों ने काफिरों के वोहमी दिलों को, जो पहले ही घेराबंदी की तकलीफदेह लम्बाई और सहयोगियों के आपसी विश्वास की कड़वे अनुभव से हिल रहे थे, एक ऐसा धक्का दिया कि फिर वे संभल न सके। और सुबह से पहले मदीना का आकाश काफिरों की धूल से साफ हो गया।

इस प्रकार हुआ कि जब इस आंधी का जोर हुआ, तो अबू सूफ़्यान ने अपने आस-पास के क़ुरैशी सरदारों को बुलाकर कहा कि हमारी समस्याएँ बहुत बढ़ रही हैं, अब यहाँ रुकना उचित नहीं है। इसलिए बेहतर है कि हम वापस लौटें और मैं तो हर हाल में जा रहा हूँ। यह कहकर उसने अपने लोगों को वापसी का आदेश दिया और फिर अपने ऊंट पर सवार हो गया, लेकिन घबराहट का यह आलम था कि ऊंट के पैरों को खोलना याद न रहा। और सवार होने के बाद ऊंट के न चलने पर उसे याद आया कि ऊंट के पैरों को अभी तक नहीं खोला गया।

इस समय इक्रिमा बिन अबू जहल अबू सूफ़्यान के पास खड़ा था। उसने किसी तंज से कहा, "अबू सूफ़्यान! तुम अमीरुल आसर होकर (लश्कर के सरदार होकर) लश्कर को छोड़कर भाग रहे हो और तुम्हें दूसरों का ध्यान भी नहीं है।" इस पर अबू सूफ़्यान शर्मिंदा हुआ और ऊंट से उतरकर कहने लगा, "ठीक है, मैं अभी नहीं जाता, लेकिन तुम लोग जल्दी-जल्दी तैयारी करो और जितनी जल्दी हो सके यहाँ से निकल जाओ।" चूंकि लोग जल्दी-जल्दी तैयारी में लग गए, अबू सूफ़्यान थोड़ी देर बाद अपने ऊंट पर सवार होकर वापस रवाना हो गया।

इस समय तक बनू ग़तफ़ान और दूसरे क़बीलों को क़ुरैश के इस पलायन की खबर तक नहीं थी। लेकिन जब क़ुरैश का कैंप तेजी से खाली होना शुरू हुआ, तो दूसरों को भी इसकी जानकारी हुई, जिस पर उन्होंने भी घबराकर पलायन की घोषणा कर दी। बनू क़ुरैज़ा भी अपने किलों के अंदर चले गए और बनू क़ुरैज़ा के साथ बनू नज़ीर का सरदार हिय्य बिन अख़तब भी उनके किलों में चला आया। इस प्रकार सुबह की उजाला आने से पहले पूरा मैदान खाली हो गया और एक तात्कालिक और अद्भुत परिवर्तन के रूप में मुसलमान विजय प्राप्त कर गए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 593-594)

यहाँ तक कि हालात ऐसे थे कि खतरा था कि काफिर उन पर कब्जा न कर लें। अब स्थिति यह थी कि वे विजयी हो गए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस घटना का विवरण लिखा है। उन्होंने कहा, "शंकाओं और संदेहों के साथ काफिरों का लश्कर रात को आराम करने के लिए अपने तंबुओं में गया, तो अल्लाह तआला ने आसमानी मदद का एक और रास्ता खोल दिया। रात को एक तेज़ आंधी चली, जिसने छतों के पर्दे तोड़ दिए, चूल्हों पर से बर्तन गिरा दिए, और कुछ क़बीलों की आगें बुझ गईं। मुश्रिकों में एक रिवाज था कि वे सारी रात आग जलाए रखते थे और इसे शुभ मानते थे। जिस की आग बुझ जाती थी, वह समझता था कि आज का दिन उसके लिए नासमझ है और वह अपने तंबू उठाकर लड़ाई के मैदान से पीछे हट जाता था।

जिन क़बीलों की आग बुझ गई, उन्होंने इस रिवाज के अनुसार अपने तंबू उठाए और पीछे चल पड़े ताकि एक दिन पीछे रुककर फिर लश्कर में शामिल हो सकें। लेकिन दिन की हलचल के कारण लश्कर के सरदारों के दिलों में संदेह पैदा हो रहे थे। जो क़बीलें पीछे हट गए, उनके आस-पास के क़बीलों ने समझा कि शायद यहूदी मुसलमानों के साथ मिलकर रात के समय आक्रमण कर रहे हैं और हमारे आस-पास के क़बीलें भाग रहे हैं। इसलिए उन्होंने भी जल्दी-जल्दी अपने डेरों को समेटना शुरू कर दिया और मैदान से भागना शुरू किया। अबू सूफ़्यान अपने तंबू में आराम से लेटा था कि इस घटना की खबर उसे भी पहुंची।

वह घबरा कर अपने बंधे हुए ऊंट पर चढ़ा और उसे ऐड़ियाँ मारनी शुरू कर दीं। अंततः उसके दोस्तों ने उसे ध्यान दिलाया कि वह क्या बेतुकी हरकत कर रहा है। इस पर उसके ऊंट की रस्सियाँ खोली गईं और वह भी अपने साथियों के साथ मैदान से भाग गया।"

(दीबाचह तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 281)

जब काफिरों की यह स्थिति हो गई, तो इस का जायज़ा लेने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हज़ीफ़ा बिन यमानी को मुश्रिकीन की खबर लेने के लिए भेजा। इसकी विस्तार से जानकारी 'सीरत ख़ातमन नबिय्यीन' में लिखी गई है कि "उसी रात, जब काफिर इस तरह अपने आप से युद्ध के मैदान से भाग रहे थे, आपने अपने चारों ओर के सहाबा को संबोधित करते हुए आवाज़ दी, 'क्या तुममें से कोई है जो इस समय जाकर काफिरों की स्थिति का पता लगाए?' लेकिन सहाबा बताते हैं कि उस समय इतनी अधिक सर्दी थी और फिर डर, थकान और भूख की यह स्थिति थी कि हम में से कोई भी अपने अंदर यह ताकत नहीं पाता था कि जवाब दे सके या अपनी जगह से हिल सके। आखिरकार, आपने खुद नाम लेकर हज़ीफ़ा बिन यमानी रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। जिस पर वह सर्दी से ठिठुरते हुए उठे और आपके सामने आकर खड़े हो गए। आपने उनकी सर पर अपने हाथ को प्यार से फेरा और उनके लिए दुआ की और कहा, 'तुम बिल्कुल मत डरो और आराम से रहो। इं शा अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ नहीं पहुंचेगी। बस तुम चुपके-चुपके काफिरों के कैंप में जाओ और किसी से कोई छेड़छाड़ मत करो और न ही अपने आपको प्रकट होने दो।'

हज़ीफ़ा कहते हैं कि जब मैं रवाना हुआ, तो मैंने देखा कि मेरे शरीर में सर्दी का नाम-ओ-निशान तक नहीं था।" जहाँ पहले यह हाल था कि वे सर्दी से पूरी तरह ठिठुर रहे थे। वे कहते हैं, "सर्दी का नाम-ओ-निशान नहीं था। बल्कि मैंने ऐसा महसूस किया कि जैसे मैं एक गर्म बाथरूम से गुजर रहा हूँ और मेरी घबराहट बिल्कुल चली गई। उस समय रात की अंधकार पूरी तरह से अपने शासन में थी। मैं बिल्कुल निडर होकर, मगर चुपके-चुपके काफिरों के 'कैंप' के अंदर पहुँच गया। उस समय मैंने देखा कि अबू सूफ़्यान एक जगह खड़ा आग सेंक रहा था। मैंने उसे देख कर तुरंत अपने तीर को तान लिया और करीब था कि मैं तीर चला देता, लेकिन फिर मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश याद आया और तीर चलाने से रुक गया। अगर उस समय मैं तीर चला देता तो अबू सूफ़्यान इस क़दर करीब था कि वह निश्चित रूप से बच न सकता था। उस समय अबू सूफ़्यान अपने लोगों को वापसी का आदेश दे रहा था और फिर वह मेरे सामने ही ऊंट पर सवार हो गया, लेकिन घबराहट की वजह से उसे अपने ऊंट के पैरों को खोलना याद नहीं रहा। उसके बाद मैं वापस लौट आया।"

वे कहते हैं, "जब मैं अपने कैंप में पहुँचा, उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने आपके फ़ारिग होने तक इंतेज़ार किया और फिर आपको पूरे घटना की सूचना दी, जिस पर आपने अल्लाह का शुकर अदा किया और फ़रमाया, 'यह हमारी किसी कोशिश या ताकत का परिणाम नहीं है, बल्कि केवल

अल्लाह के फ़ज़्ल की वजह से है, जिसने अपने दम से अहज़ाब को पीछे हटा दिया।' इसके बाद काफिरों के पलायन की खबर तुरंत सारे मुसलमानों के कैंप में फैल गई।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 594-595)

इस घटना को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस प्रकार बयान किया है। उन्होंने कहा कि "रात के आखिरी तीसरे हिस्से में वह मैदान, जहाँ लगभग पच्चीस हजार काफिर के सिपाही तंबू डाले हुए थे, एक जंगल की तरह वीरान हो गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस समय अल्लाह तआला ने इल्हाम के जरिए बताया कि 'हमने तुम्हारे दुश्मन को भगा दिया है।'" अल्लाह तआला ने बताया था, तब ही आपने सहाबा से पूछा था कि कौन है जो आए। "आपने हालात की जानकारी लेने के लिए किसी व्यक्ति को भेजना चाहा और अपने चारों ओर बैठे हुए सहाबा को आवाज़ दी। वे सर्दी के दिनों थे और मुसलमानों के पास कपड़े भी पर्याप्त नहीं होते थे। सर्दी के मारे ज़बानें तक जम रही थीं।" बोल नहीं सकते थे। "कुछ सहाबा कहते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ सुनी और हम जवाब भी देना चाहते थे, लेकिन हमसे बोला नहीं गया। केवल एक हज़ीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु थे जिन्होंने कहा, 'हे रसूलुल्लाह! क्या काम है?'"

यहाँ हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह नहीं कहा कि आपने हज़रत हज़ीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उन्होंने कहा था तो "आपने फ़रमाया, 'तुम नहीं, मुझे कोई और आदमी चाहिए।' फिर आपने कहा, 'कोई है?' लेकिन फिर सर्दी की तीव्रता की वजह से जो जाग भी रहे थे, वे जवाब न दे सके। हज़ीफ़ा ने फिर कहा, 'मैं हूँ, हे रसूलुल्लाह!' अंततः आपने हज़ीफ़ा को यह कहते हुए भेजा कि 'अल्लाह तआला ने मुझे खबर दी है कि हमने तुम्हारे दुश्मन को भगा दिया है। जाओ और देखो कि दुश्मन का क्या हाल है।' हज़ीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु खंदक के पास गए और देखा कि मैदान पूरी तरह दुश्मन के सिपाहियों से खाली था। वापस आए और कलमा शाहादत पढ़ते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत की तस्दीक की और बताया कि दुश्मन मैदान छोड़कर भाग गया है।"

(दीबाचह तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 281-282)

बाकी विवरण इं शा अल्लाह अगले खुत्बे में वर्णन करूंगा।

दुनिया के हालात, जैसा कि आपको पता है, दिन-ब-दिन खराब होते जा रहे हैं। तबाही की ओर जा रहे हैं। अमेरिका और बड़ी ताकतें इंसाफ से काम नहीं लेना चाहतीं। युद्ध विस्तृत होते जा रहे हैं। अल्लाह तआला अहमदियों और मासूमों को इसके खतरनाक और बुरे असर से बचाए। इसके लिए अल्लाह तआला से संबंध में हमें बढ़ना होगा और दुआओं की ओर बहुत अधिक ध्यान देना होगा। हर अहमदी को इसकी ओर ध्यान देना चाहिए।

पाकिस्तान में अहमदियों के भी हालात काफी खराब हो रहे हैं। उनके लिए भी दुआ करें। बांग्लादेश के अहमदियों के हालात के लिए भी दुआ करें। उन लोगों पर भी बड़ी कठिनाइयाँ हैं। अल्लाह तआला सब पर रहम और फ़ज़्ल फ़रमाए।

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 25 अक्टूबर 2024, पृष्ठ 2 से 6)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान
27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

हाँ, उन्हें यह कहने का अधिकार तब हो सकता था, यदि वे किसी खुदा-विश्वासी के कहने के अनुसार सत्य की खोज में प्रयास करते और खुदा को खोजते। फिर यदि उन्हें खुदा न मिलता, तो वे अवश्य कह सकते थे कि खुदा नहीं है। लेकिन जब उन्होंने कोई प्रयास और संघर्ष ही नहीं किया, तो उन्हें इंकार करने का अधिकार नहीं है। संक्षेप में, खुदा का अस्तित्व है, और यह एक ऐसी वास्तविकता है कि जिस हद तक उस पर विश्वास बढ़ता जाता है, उसी हद तक शक्ति प्राप्त होती जाती है, और वह छिपी हुई हस्ती प्रकट होने लगती है, यहाँ तक कि स्पष्ट रूप से उसे देख लिया जाता है और फिर यह शक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। यही एक बात है जिसकी खोज संसार को करनी चाहिए, लेकिन आज दुनिया में ये शक्तियाँ शेष नहीं रही हैं।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 43, संस्करण 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

अलावा कोई और ख़ुदा होता, तो आज हम जो देख रहे हैं, वह कभी न होता। अब हमें यकीन हो गया है कि एकमात्र अल्लाह ही है।"

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِلّٰهِ की भविष्यवाणी उस दिन बहुत शान से पूरी हुई, और अरब के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक *ला इलाहा इल्लल्लाह* की आवाज़ें गूंजने लगीं।

फिर आयत

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ

"फ-लज़ीना आमनु वा अमिलुस्सलिहात फी जन्नातिन न'ईम, वल-ज़ीना कफरू वा कज़्ज़बू बिआयातिना फ़उलाएक लहुम अज़ाबुम मुहीन"

में बताया गया कि इलाही सिलसिलों की तरक़्क़ी में शैतान चाहे जितनी भी बाधाएँ डाले और जितने भी षड्यंत्र करे, अंततः अल्लाह के नबी ही विजयी होते हैं, और काफिरों की सभी योजनाएँ विफल हो जाती हैं। इस प्रकार, मोमिन तरक़्क़ी करते हैं, जबकि विरोधी निराश होकर दुख, क्रोध, और अपमान की आग में जलते रहते हैं, और यही दुनिया उनके लिए जहन्नुम बन जाती है।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِلّٰهِ के माध्यम से एक आपत्ति का जवाब भी दिया गया है। कुछ लोग सुरह फातिहा के *मालिके यौमिद्दीन* शब्द पर यह कहते हुए आपत्ति करते हैं कि अल्लाह को मालिक क्यों कहा गया, मलिक (बादशाह) क्यों नहीं कहा गया। जबकि मलिक (बादशाह) का अधिकार मालिक (बादशाह) से अधिक होता है। इस आपत्ति का उत्तर *अल-मुल्कु यौमैइध लिल्लाह* में है क्योंकि अल्लाह फ़रमाता है कि उस दिन सरकार अल्लाह की होगी और वह न्याय करेगा। अर्थात् अल्लाह केवल मालिक ही नहीं बल्कि संपूर्ण अधिपति यानी बादशाह भी है। परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि वह आज के राजाओं की तरह किसी उच्च नियम का पालन करता है। बल्कि, अल्लाह रहमान है, उसके निर्णयों में न अत्याचार है और न ही तानाशाही। इसी तरह, सूरह फुरकान में फ़रमाता है :

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِنِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ *अल-मुल्कु यौमैइध लिर्रहमान* (फुरकान आयत : 3)

अर्थात : उस दिन वास्तव में रहमान का ही शासन होगा। इसी प्रकार एक और जगह फ़रमाता है :

सुम्मा मा अद्राका मा यौमुद्दीन, यौम लातमलिकु नफ्सु ल-नफ्सि शैअन वल-अम्रु यौमैइध लिल्लाह (सुरह अल-इनफ़ितार)

अर्थात: क्या तुमने समझा कि न्याय का दिन क्या है? वह वह दिन होगा जब कोई जान किसी और जान की मालिक नहीं होगी, और उस दिन केवल अल्लाह का हुक्म होगा।*

इन आयतों से सिद्ध है कि अल्लाह को शासन का अधिकार प्राप्त है। इसलिए सुरह फातिहा में *मालिक* का उपयोग यह बताने के लिए है कि अल्लाह केवल मालिक नहीं बल्कि ऐसा अधिपति है जो पूरी मख़लूक का मालिक भी है, और जो मालिक-शासक हो, उसे पूर्ण अधिकार होता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 6, पृष्ठ 77, क़ादियान, संस्करण 2010)

★ ★ ★

सूरः नूर की एक आयत की व्याख्या और क़ुरआन की आयतों की व्याख्या के संबंध में हज़ूर अनवर का अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का मार्गदर्शन

क्या कोई महिला जिस ने खुद बैत न की हो, दूसरों को अहमदियत का प्रचार कर सकती है? क्या यह कहना सही है कि मेरा अमुक राशि है? और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो सूर्य और नक्षत्रों के प्रभाव का उल्लेख किया है, उसका क्या सत्य है?

वित्तीय लेन-देन के एक मामले में हज़ूर अनवर का मार्गदर्शन

रोज़े के दौरान कोरोना वैक्सीन का इंजेक्शन लगवाने के बारे में हज़ूर अनवर का मार्गदर्शन

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-34)

प्रश्न : एक महिला ने सूरह नूर की एक आयत की स्वयं व्याख्या करके उसे हज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में पेश करके इस बारे में मार्गदर्शन मांगा। साथ ही पूछा कि क्या ऐसा करने की अनुमति है? हज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 10 मार्च 2021 में इस बारे में निम्नलिखित मार्गदर्शन प्रदान किया :

उत्तर: आपने इस आयत की जो व्याख्या की है, वह अच्छी है। आपकी व्याख्या में दी गई अधिकतर बातें जमाअती साहित्य में भी उपलब्ध हैं। आपने एक-दो बातें अतिरिक्त बयान की हैं, जैसे कि ज़ैतून का तेल 550 डिग्री पर जलता है, इसलिए इसके दिए के गिरने से आग नहीं भड़कती। शायद यह भी जमाअती साहित्य में कहीं उल्लिखित है, लेकिन मेरी नज़र से नहीं गुज़री है।

जहां तक क़ुरआन की तफ़सीर (व्याख्या) करने का संबंध है, इसके लिए मूल रूप से क़ुरआन में दी गई शिक्षाओं, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत, हदीस-ए-नबी (स.अ.व.) और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का व्यापक और गहन ज्ञान होना आवश्यक है। इसके बाद ही कोई व्यक्ति क़ुरआन की तफ़सीर करने का पात्र हो सकता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तफ़सीर-ए-क़ुरआन के जो सिद्धांत बताए हैं, उन्हें संक्षेप में आपके लाभ के लिए यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।

हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक रूहानी ख्वाब के आधार पर क़ुरआन की तफ़सीर के तीन उसूल बताते हुए फ़रमाया: "जब किसी आयत के मफ़हूम पर तुममें इख्तिलाफ हो जाए, तो सबसे पहले क़ुरआन की दूसरी आयतों पर गौर करो कि वे किस मतलब की ताईद करती हैं। अगर आयतें न मिलें, तो हदीस-ए-नबी में उसका मफ़हूम तलाश करो। और अगर हदीसों में भी तुम्हें उसके माने न मिलें, तो किसी इल्हाम पाने वाले के कलाम और उसकी तशरीहात को देखो, क्योंकि अल्लाह से ताजा रौशनी और इल्हाम पाने के कारण उसकी अक़्ल रोशन हो जाती है।"

(उद्धृत खुत्बा जुमा, 21 नवंबर 1947, मुद्रित खुत्बात-ए-महमूद, भाग 28)

हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी तसनीफ "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारनामे" में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा बताए गए तफ़सीर के उसूल बयान करते हुए फरमाते हैं कि क़ुरआन को समझने के लिए यह ज़रूरी है कि इंसान अल्लाह से ताल्लुक पैदा करे। क़ुरआन पर ध्यान दे और यह समझे कि उसका हर लफ्ज़ तरतीब से रखा गया है। उसमें कोई लफ्ज़ बे-मकसद नहीं है, न ही कोई बे-माने है। क़ुरआन अपने हर दावे की दलील खुद पेश करता है और अपनी ही तफ़सीर आप करता है। इसमें दोहराव नहीं है, न ही इसमें सिर्फ कहानियां हैं। क़ुरआन का कोई हिस्सा मंसूख नहीं है। अल्लाह के कलाम और उसकी सुन्नत में कभी इख्तिलाफ नहीं हो सकता। अरबी के शब्द समानार्थी नहीं होते, बल्कि उसके हरूफ़ अपने अंदर मायने रखते हैं। क़ुरआन की सूरते इंसानी अंगों की तरह हैं, जो एक-दूसरे से मिलकर और एक-दूसरे के मुकाबले में अपने कमाल का इज़हार करती हैं।

(उद्धृत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारनामे, अनवार-उल-उलूम, भाग 10, पृष्ठ 157-159)

इन ज़रूरी उसूलों को ध्यान में रखते हुए, अगर आप समझती हैं कि आप क़ुरआन की सही तशरीह कर सकती हैं, तो ज़रूर लिखें और लिखकर मुझे भेज सकती हैं। वैसे भी, क़ुरआन किसी एक वर्ग की मिल्कियत या विरासत नहीं है, बल्कि यह तमाम इंसानियत के लिए हिदायत और रहनुमाई का स्रोत है। हर वर्ग और हर स्तर का इंसान अपनी अक़्ल और अपनी ताकत के मुताबिक इससे फायदेमंद हो सकता है। इस बात को बयान करते हुए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह से जो क़ुरआनी ज्ञान मिला, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं: "पांचवा उसूली ज्ञान जो आपको दिया गया है, यह है कि क़ुरआन ज़ुल-मा'नी है, इसके कई पहलू हैं। इसे जिस अक़्ल और जिस समझ का आदमी पढ़ेगा, उसमें उसे अपनी समझ और अपनी सलाहियत के मुताबिक सही तालीम मिलेगी। मानो अल्फाज़ एक हैं लेकिन मफहूम कई हैं। अगर मामूली अक़्ल का इंसान इसे पढ़ेगा, तो वह इसमें मोटे-मोटे सबक पाएगा, जिन्हें समझना उसके लिए मुश्किल नहीं होगा। अगर मध्यम स्तर के ज्ञान का आदमी इसे पढ़ेगा, तो वह अपने ज्ञान के मुताबिक इसमें विषय पाएगा। और अगर उच्च स्तर के ज्ञान का व्यक्ति इसे पढ़ेगा, तो वह अपने ज्ञान के मुताबिक इसमें ज्ञान पाएगा। मतलब यह कि न तो कम जानने वाले इसे अपनी अक़्ल से बाहर पाएंगे और न ही उच्च ज्ञान के लोग इसे साधारण किताब समझेंगे, जिसमें उनकी दिलचस्पी या इल्मी तरक्क़ी का कोई सामान न हो।"

(दावातुल् अमीर, अनवार-उल-उलूम, भाग 7, पृष्ठ 513)

प्रश्न: एक गैर-अहमदी अरब महिला ने हज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखा कि मैंने अभी बैत नहीं की है क्योंकि मुझे डर है कि शायद मैं बैत की शर्तों को पूरा न कर पाऊं। लेकिन क्या मैं अपनी सहेलियों को अहमदियत का प्रचार कर सकती हूँ? साथ ही इस महिला ने राशियों के बारे में मार्गदर्शन चाहा और पूछा कि क्या यह कहना सही है कि मेरा अमुक राशि है? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो सूर्य और नक्षत्रों के प्रभाव का वर्णन किया है, उसका क्या सत्य है? हज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 13 मार्च 2021 में इस बारे में निम्नलिखित हिदायतें प्रदान कीं :

उत्तर: अल्लाह का सनिध्य पाने के लिए प्रयास (मुजाहिदा) और दुआ अनिवार्य शर्त हैं। केवल किसी नेक काम का इरादा करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस पर अमल भी आवश्यक है। अल्लाह ने जब आपको अपनी सच्ची राह दिखा दी है, तो अब आपका कार्य है कि आप दुआ और प्रयास से उसे पाने का यत्न करें। जब आप ऐसा करेंगी, तो अल्लाह अपने फज़ल से आपके लिए और भी सहूलतें पैदा करेगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुरआनी शिक्षाओं की रोशनी में इस बात को यूं बयान करते हैं: "तक़्वा की मंजिल बड़ी कठिन है, इसे वही पार कर सकता है जो पूरी तरह अल्लाह की मर्ज़ी पर चले, जो वह चाहे वही करे, अपनी मर्ज़ी न करे। नकली रूप से कुछ हासिल करना चाहे तो हरगिज़ न होगा। इसलिए अल्लाह के फज़ल की ज़रूरत है और वह इसी तरह हो सकता है कि एक तरफ़ तो दुआ करे और दूसरी तरफ कोशिश करता रहे। अल्लाह ने दुआ और कोशिश दोनों का हुक्म दिया है।

اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ۔

'उद'ऊनी अस्तजिब लकम' में दुआ की ताकीद की है और

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

'वल्लज़ीना जाहदू फीना लनहदियन्नहुम सुअलना' में कोशिश की ताकीद की है। जब तक तक़्वा न हो, तब तक अल्लाह के वलियों में शामिल होना मुमकिन नहीं और जब तक यह न हो, तब तक हकीकतें और मआरिफ़ कभी न खुलेंगे।"

(अल्-बदर, भाग 3, नंबर 2, 8 जनवरी 1904, पृष्ठ 3)

अल्लाह से मिलने वाले इनामों का शुक्राना अदा करने का एक तरीका यह है कि इन इनामों में दूसरों को भी शामिल किया जाए। अतः अल्लाह ने अपने फज़ल से आपको अहमदियत यानी असली इस्लाम की ओर मार्गदर्शन दिया है। अब आप

अपनी सहेलियों को इस सच्ची राह की दावत देकर अल्लाह के इस इनाम का शुक्र अदा कर सकती हैं।

आकाशीय राशियों का क़ुरआन में कई जगह ज़िक्र है। जैसा कि फ़रमाया :

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا

"व ल क़द ज'अलना फ़ी समा बुरूजन" (अल-हिजर: 17), और निश्चित रूप से हमने आकाश में (सितारों की) कई मंज़िलें बनाई हैं। फिर फ़रमाया :

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا

"तबारकल्लज़ी ज'अला फ़ी समा बुरूजन" (अल-फुरकान: 62),

अर्थात् वह हस्ती बरकत वाली है जिसने आकाश में सितारों के ठहरने के स्थान बनाए। फिर कहा :

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ

"वस्समा ज़ातिल बुरूज" (अल-बुरूज: 2), अर्थात् मैं राशियों वाले आकाश को गवाह के तौर पर पेश करता हूँ। इसके अतिरिक्त, अल्लाह ने सूरज, चाँद, तारे और अन्य आकाशीय पिंडों का क़ुरआन में विस्तृत रूप से उल्लेख किया है।

हदीसों में भी इन आकाशीय पिंडों का विभिन्न अर्थों में उल्लेख किया गया है। उदाहरण के तौर पर हदीस में उल्लेख है कि रोम का सम्राट हेराक्लियस (जो ज्योतिष का बहुत बड़ा जानकार था) ने सितारों की चाल से अंदाज़ा लगा लिया था कि पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अवतरण हो चुका है या जल्द होने वाला है।

(सहीह बुखारी, किताब बदउल-बहाई)।

हदीस में यह भी आया है कि सितारे आकाश की सुंदरता, शैतानों को भगाने और रास्ता बताने के लिए बनाए गए हैं। जिसने इनसे अलग कोई अर्थ निकालने की कोशिश की, उसने गलती की और ऐसी चीज़ के पीछे पड़ा जिसका उसे कोई ज्ञान नहीं था।

(सहीह बुखारी, किताब बदउल-खल्क)

इसी प्रकार फ़रमाया गया कि जिसने सितारों के जरिये कुछ सीखा, उसने जादू का एक हिस्सा पाया।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुत-तिब, बाब फी नजूम)

इसके अलावा, पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया कि सूर्य और चंद्र ग्रहण का किसी की मृत्यु या जीवन से कोई संबंध नहीं है।

(सहीह बुखारी, किताब जुमा, बाब अस्सलाह फी कुसूफिश-शम्स)

परंतु, सूरज और चाँद के ग्रहणों को आपने अपने मसीह-महदी के आगमन के दो बेमिसाल संकेत बताया, जो अपने वक्त पर पूरी तरह से प्रकट हुए और मसीह मोहम्मदी की सच्चाई पर मुहर लगाई।

(सुनन दारुल कुतनी, किताबुल-ईदैन, बाब सिफतुस सलाह अल-खुसूफ वल-कुसूफ)।

क़ुरआन और हदीस की इन शिक्षाओं की रोशनी में, उलेमा इस बात को शिर्क मानते हैं कि ये आकाशीय पिंड बिना अल्लाह की मर्जी के धरती के घटनाओं पर असर डाल सकते हैं। साथ ही, इन पिंडों की चाल से भविष्य जानने की सोच को गुनाह-ए-कबीर मानते हैं। हालांकि, ये मानते हैं कि इनकी चाल से मौसम और समय का अंदाजा लगाया जा सकता है।

हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताबों में आकाशीय पिंडों का बड़े विवेकपूर्ण वर्णन किया है। इसके बारे में विरोधियों के एक सवाल का उत्तर देते हुए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "हमारा यह मानना नहीं है कि सूरज, चाँद या कोई भी सितारा अपने कर्म में स्वतंत्र या स्वायत्त है, या उसके पास प्रकाश, वर्षा या जीव-जगत की वृद्धि में प्रभाव डालने का अधिकार है...। हमारा यह विश्वास भी है कि चीजों के गुण एक सच्चाई हैं, और उनमें प्रभाव उस परम ज्ञानी और बुद्धिमान अल्लाह की अनुमति से होते हैं, जिसने कोई भी चीज़ बेकार नहीं बनाई। सच्चाई यह है कि सूरज, चाँद और सितारों का प्रभाव ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हर समय और हर जगह देखा जा सकता है और इससे इंकार करने की कोई जगह नहीं है। जैसे मौसम और उनकी स्थितियों का भिन्न होना, और हर मौसम का विशिष्ट रोगों, विशिष्ट वनस्पतियों और कीड़ों से जुड़ा होना, एक ऐसी सच्चाई है जो स्पष्ट है। ...तुम जानते हो कि जब सूरज उगता है और रोशनी फैलती है, तो निस्संदेह उस समय वनस्पतियों, पत्थरों, और पशुओं पर एक विशेष प्रभाव पड़ता है। फिर जब दिन ढलता है और सूर्य अस्त के करीब होता है, तो उस समय का प्रभाव अलग होता है। कुल मिलाकर, सूर्य की दूरी और निकटता का वृक्षों, फलों, पत्थरों और मनुष्यों की प्रवृत्तियों पर गहरा और महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ...चाँद के भी कई प्रभाव हैं जिन्हें किसान और खेती करने वाले लोग जानते हैं। ...और विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि पृथ्वी के मध्य रेखा के करीब रहने वाले लोग सबसे संतुलित स्वभाव के होते हैं और उनकी बेहतर सेहत, समझदारी और दूरदर्शिता का कारण विशेष प्रभाव ही है।"

(हमामातुल-बुशरा, रूहानी खजायन, भाग 7, पृष्ठ 285-288, उर्दू अनुवाद पृष्ठ 265-270, प्रकाशित नज़ारत नशरों ईशात, क़ादियान)।

आकाशीय नक्षत्रों का उल्लेख करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "रहमान वह महान हस्ती है जो अत्यधिक बरकतों और अच्छाइयों का स्रोत है, जिसने आकाश में नक्षत्र बनाए। इन नक्षत्रों में सूर्य और चंद्रमा को रखा, जो सभी सृजित प्राणियों को बिना किसी भेदभाव के, चाहे वह काफिर हो या मोमिन, प्रकाश प्रदान करते हैं।"

(बराहीन ए अहमदिया, रूहानी खजायन, खंड 1, पृष्ठ 448, टिप्पणी 11)

फिर इन आकाशीय पिंडों के प्रभावों के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं: "ये सितारे केवल आकाश की सजावट के लिए नहीं हैं जैसा कि आम लोग सोचते हैं, बल्कि इनमें प्रभाव मौजूद हैं। जैसा कि क़ुरआन की आयत

وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَحِفْظًا

'वज़जैनास्समादुनिया बिमसाबीहा वहिफ्ज़न'

(हमने निकट के आकाश को दीपों से सजाया और रक्षा का माध्यम बनाया) से, 'हिफ्ज़न' शब्द से पता चलता है। यानी दुनिया की सुरक्षा में इन सितारों की भूमिका है, ठीक वैसे ही जैसे मानव स्वास्थ्य में दवाओं और भोजन का योगदान होता है। इनका असर खुदा तआला के आदेश से होता है। यही सही तथ्य है कि सितारों का प्रभाव होता है जो पृथ्वी पर असर डालता है। इस व्यक्ति से अधिक अज्ञानी कोई नहीं हो सकता जो जड़ी-बूटियों और दवाओं के प्रभाव को मानता है लेकिन उन सितारों के प्रभाव का इंकार करता है जो खुदा तआला की शक्ति का प्रथम प्रतीक और अजूबों के स्रोत हैं।"

(तौहफा गोलड़विया, रूहानी खजायन, खंड 17, पृष्ठ 282-283, टिप्पणी)

इन उद्धरणों से यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह ने आकाश में जो सूर्य, चंद्रमा, ग्रह, सितारे और नक्षत्र बनाए हैं, वे बिना उद्देश्य के नहीं हैं। इन पिंडों की चाल से हमारे दिन-रात, साल, महीने और मौसम बदलते हैं। इनके प्रभावों का कई बार हम दैनिक जीवन में अनुभव करते हैं, और विज्ञान भी समय-समय पर इनकी नई-नई प्रभावों को खोजता है।

ज्योतिषविदों और खगोलशास्त्रियों ने सूर्य की गति और पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर चक्कर को आधार बनाकर 12 महीनों के अनुसार 12 भाग किए हैं और इन्हें 12 राशियों के नाम दिए हैं। जन्म तिथि के अनुसार किसी राशि के अंतर्गत गिनने में कोई हानि नहीं है, लेकिन इन राशियों से भविष्य की जानकारी और पूर्वानुमान लगाना केवल अटकलें और अनुमान हैं। इसका सच्चे ज्ञान से कोई संबंध नहीं।

प्रश्न: एक आर्थिक लेन-देन के मामले में एक पक्ष ने एक सम्मानित मुफ़्ती से फ़तवे की अपील की और इसकी प्रति हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के समक्ष प्रस्तुत की। इस पर, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 25 मार्च 2021 में निम्नलिखित मार्गदर्शन प्रदान किया:

उत्तर: आपने अपने विवाद के संबंध में जो विस्तार से पत्र मुफ़्ती साहिब को भेजा था, और जिसकी प्रति आपने मुझे भी भेजी थी, मैंने मुफ़्ती साहिब को इसका जवाब देने का निर्देश दिया था और उनसे यह भी कहा था कि वे अपने जवाब की एक प्रति मुझे भी भेजें।

मुफ़्ती साहिब का फ़त्वा, आपके विवाद से संबंधित फाइलें और दारुल-क़ज़ा (न्यायालय) का निर्णय यह स्पष्ट करते हैं कि जो फैसला हुआ है, वह बिल्कुल सही है। दारुल-क़ज़ा द्वारा आप पर जो अतिरिक्त राशि (हरजाना) लगाई गई है, वह सूद की श्रेणी में नहीं आती। यह राशि दूसरे पक्ष का अधिकार है, और इस राशि को प्राप्त करने में कोई धार्मिक रुकावट नहीं है।

प्रश्न: रोज़े के दौरान कोरोना वैक्सीन का इंजेक्शन लगवाने की अनुमति के एक गैर-अहमदी संस्था के फतवे के एक जामाअती पत्रिका में प्रकाशन पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 13 अप्रैल 2021 के पत्र में इस धार्मिक मसले पर स्पष्ट किया:

उत्तर: ऐसी ख़बरों और फतवों को अल-फज़्ल में प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं है। और यदि किसी कारण से इसे प्रकाशित करना ज़रूरी था, तो साथ ही जामाअती मस्लक भी प्रकाशित करना चाहिए था, ताकि इस बात को स्पष्ट किया जा सके कि यह गैर-अहमदी संस्था का फ़तवा है, जबकि जामाअती मस्लक इसके विपरीत है। इससे पाठक किसी भ्रम का शिकार न हो।

अब तुरंत इसका खंडन प्रकाशित करें और स्पष्ट करें कि जामाती मस्लक यह है कि

रोज़े के दौरान किसी भी प्रकार का इंजेक्शन, चाहे वह इंट्रामस्क्युलर हो या इंट्रावीनस, लगवाना मना है। यदि किसी अहमदी को रमज़ान में कोरोना वैक्सीन का समय मिलता है, तो वह इस्लाम द्वारा दी गई छूट का लाभ उठाकर उस दिन का रोज़ा छोड़ सकता है और रमज़ान के बाद इस रोज़े को पूरा कर सकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हदीसों के आधार पर रोज़े के दौरान आँखों में सुरमा लगाने की भी अनुमति नहीं दी।

और आप "अल-फज़ल" में इस फतवे के अनुसार इंजेक्शन को भी जायज़ करार दे रहे हैं।

यह मुलाकातें एक बजकर दस मिनट पर खत्म हुईं। बाद में श्रीमान डॉक्टर फहीम युनूस साहब, उप अमीर अमेरिका, और मीर उमर अहमद साहब ने हज़ूर अनवर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया और अंसार हाउसिंग कॉम्प्लेक्स की प्रगति रिपोर्ट पेश की। यह हाउसिंग कॉम्प्लेक्स मस्जिद बेइतर्रहमान से 50 मील की दूरी पर स्थित जोप्पा टाउन में बनाया गया है। इस कॉम्प्लेक्स में दो हजार पांच सौ वर्ग फुट से लेकर तीन हजार वर्ग फुट के 48 घर बनाए गए हैं, और लगभग दस हजार वर्ग फुट के क्षेत्र में एक कम्युनिटी सेंटर भी स्थापित किया गया है। इस सेंटर में नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद का हॉल भी बनाया गया है।

हज़ूर अनवर ने पहले साल 2018 में इस प्रोजेक्ट का दौरा किया था और इस अवसर पर विस्तृत निर्देश दिए थे। अब इन सभी निर्देशों के अनुसार काम अंतिम चरण में है। डॉक्टर फहीम क़ुरेशी साहब ने इस अवसर पर श्रीमान ख़ुर्रम बशीर साहब के लिए दुआ की दरख़्वास्त की। मोसीफ ने इस प्रोजेक्ट पर बेहद सेवा करने की तौफीक पाई है।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम एक बजकर बीस मिनट तक जारी रहा। बाद में एक बजकर चालीस मिनट पर हज़ूर अनवर ने मस्जिद बेइतर्रहमान में आकर नमाज़-ए-ज़ुहर और अस्र को जमा करके पढ़ाया। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अपनी निवास स्थान पर चले गए।

पुरुषों की सामूहिक मुलाकात

प्रोग्राम के अनुसार, शाम छह बजे हज़ूर अनवर मस्जिद के पुरुष हॉल में तशरीफ़ लाए, जहाँ पुरुष अहबाब के साथ हज़ूर अनवर की सामूहिक मुलाकात का कार्यक्रम रखा गया था।

इस मुलाकात में 225 अहबाब शामिल हुए। इनमें एक बहुत बड़ी संख्या ऐसी थी जिनकी हज़ूर अनवर के साथ उनकी ज़िंदगी में पहली मुलाकात थी।

हज़ूर अनवर ने फ़ज़ल करते हुए इन अहबाब को बात करने का मौक़ा दिया। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "जिसने बात करनी है, कुछ कहना है, बारी-बारी हाथ खड़ा करें और बात करते जाएं।"

एक नौजवान उस्मान हैदर साहब रब्वह से आए थे। उन्होंने कहा कि यहाँ तीन साल से आश्रय लिए हुए हैं, लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं आया। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "आपको सब्र करना पड़ेगा। इंशाल्लाह हो जाएगा। जाब कर रहे हैं तो फिर ठीक है। अल्लाह तआला फ़ज़ल करेगा।"

एक दोस्त इक्तेशाम अल्हसन साहब रब्वह से आए थे। जब उन्होंने अपना परिचय कराया तो हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपके भाई, रिश्तेदार तो जर्मनी में भी हैं, यूके में भी हैं, आयरलैंड में भी हैं। मोसीफ़ ने कहा, "मैं रब्वह में F.Sc कर रहा था। अब इधर आ गया हूँ, मेरी कामयाबी के लिए दुआ करें।" इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़र्माए।"

एक दोस्त श्रीलंका से आए थे। उन्होंने कहा, "हमारे केस रिजेक्ट हो चुके थे। हज़ूर अनवर की हिदायत पर जमाअत ने हमारे लिए बहुत कोशिश की। अब हम यहाँ बैठे हैं। हम शुक्रिया अदा करते हैं।" हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "वहाँ जो हालात खराब हुए थे, उससे पहले निकल आए थे।" इस पर उन्हों ने अर्ज किया, "हम पहले आ गए थे।"

एक नौजवान ने अर्ज किया, "मैं 24 साल का हूँ, शादी कर के आया हूँ, स्कूल का डिप्लोमा ले रहा हूँ। फिर आगे और पढ़ना है।" इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला कामयाब करे।"

एक दोस्त ने अर्ज किया, "मैं पाकिस्तान से वहाड़ी से आया हूँ। आज यहाँ सिर्फ हज़ूर अनवर का दीदार करने आया हूँ।" एक बुज़ुर्ग ने हाथ में माइक पकड़ा और अर्ज किया, "मैं पीछे बैठा हुआ था। मुझे हज़ूर सही तरह नज़र नहीं आ रहे थे। तो मैंने माइक सिर्फ इस लिए पकड़ा है कि खड़ा होकर हज़ूर का दीदार कर लूं। वरना मेरा कोई सवाल, दरख़्वास्त नहीं है।"

एक दोस्त ने अर्ज किया, "मेरा बेटा ग्यारह साल से मलेशिया में है, उसके लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला उसकी मुसीबतें दूर फरमाए और हमें मिलने के सामान पैदा करे।" हज़ूर ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़र्माए।"

एक नौजवान ने अपनी पढ़ाई का बताकर आगे की शैक्षिक क्षेत्र के लिए मार्गदर्शन चाहा तो हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "मेडिसिन करो और दुनिया के काम आओ।"

एक दोस्त ने बताया, "मैं श्रीलंका से आया हूँ। यहाँ काम भी कर रहा हूँ।" हज़ूर अनवर ने इस नौजवान को हिदायत दी, "शादी कराओ।"

एक दोस्त ने बताया, "श्रीलंका में आठ साल रहकर आया हूँ। हालात काफी खराब रहे हैं। बड़ी मुसीबतों से गुज़रे हैं।" इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "जब इस तरह सफ़र पर निकलते हैं तो मुसीबतें तो आती हैं। अब आप यहाँ पहुँच गए हैं। हमेशा अपने दीन को मुक़दाम करने का इरादा करो। अल्लाह तआला फ़ज़ल करता रहेगा। इबादत का हक अदा करो, ये न हो कि अमेरिका आए हो तो दुनिया में डूब जाओ।"

एक नौजवान ने अर्ज किया, "मैं श्रीलंका से आया हूँ।" हज़ूर अनवर ने नसीहत करते हुए फ़रमाया, "शादी कराओ और हमेशा अल्लाह को याद रखो।"

एक साहब ने अर्ज किया, "मैं बर्मा से आया हूँ। यहाँ रिफ्यूजी केस किया है। वहाँ पर लेक्चरर था। अब यहाँ पीएचडी कर रहा हूँ।" हज़ूर अनवर के इस तफतीश पर बताया कि "बीवी बच्चे मेरे साथ हैं।" हज़ूर ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़र्माए।"

एक दोस्त ने हज़ूर अनवर की ख़िदमत में अपने यहाँ क़ियाम के हवाले से बात की तो हज़ूर ने फ़रमाया, "अब आपने यहाँ रहना है या वापस जाना है?" फिर फ़रमाया, "पांव जमा लो। जॉब की ऑफर हुई है तो क़बूल कर लो और यहाँ रहो।"

एक बुज़ुर्ग ने अर्ज किया, "मैं पाकिस्तान से आया हूँ। मेरी नज़र गिरती जा रही है। मेरा दायां घुटना खराब है, काम नहीं करता।" इस पर हज़ूर अनवर ने पूछ ताछ की, "आपकी उम्र क्या है?" उन साहब ने अर्ज किया, "92 साल है।" इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "फिर अब तो घुटने खराब ही होने हैं।"

★ ★ ★

घोषणा: ड्राइवर पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान

शर्तें:

1. उम्मीदवार की आयु 18 वर्ष से अधिक और 40 वर्ष से कम होनी चाहिए।
2. उम्मीदवार के पास कम से कम दसवीं कक्षा पास होना आवश्यक है।
3. उम्मीदवार के पास चार पहिया वाहन चलाने का वैध लाइसेंस होना आवश्यक है।
4. उम्मीदवार के लिए किसी सरकारी या निजी संस्था में ड्राइविंग का कम से कम 2 वर्ष का अनुभव होना आवश्यक है। इसके अलावा, अपनी आवेदन के साथ उस संस्थान का अनुभव प्रमाणपत्र भी प्रस्तुत करना आवश्यक है जहां उम्मीदवार ने अनुभव प्राप्त किया है।
5. उम्मीदवार को अपना जन्म प्रमाणपत्र जमा करना होगा।
6. उम्मीदवार को लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होना आवश्यक है।
7. लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होने वाले उम्मीदवारों का ड्राइविंग टेस्ट भी लिया जाएगा।
8. उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि वह नूर अस्पताल कादियान से चिकित्सा फिटनेस प्रमाणपत्र के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त हो।
9. चयनित ड्राइवर को नियुक्ति के बाद दूसरे श्रेणी के बराबर भत्ते और अन्य सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।
10. चयन होने की स्थिति में उम्मीदवारों को कादियान में प्रारंभिक पांच वर्षों तक अपनी आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।
11. उम्मीदवार यात्रा का खर्च (आवागमन) स्वयं करेगा।

नोट: लिखित परीक्षा, साक्षात्कार और ड्राइविंग टेस्ट की तारीख के बारे में उम्मीदवारों को बाद में सूचित किया जाएगा।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान, पिन कोड: 143516

मोबाइल: 09888232530, 09682627592

दफ़्तर: 01872-501130

ई-मेल: diwan@qadian.in

पृष्ठ12का शेष भाग

हज़ूर-ए-अनवर ने कहा, "मैं घाना को अच्छी तरह जानता हूँ। मैं घाना से प्यार करता हूँ और मेरी इच्छा है कि यह अफ्रीका के सबसे अच्छे देशों में गिना जाए।"

राजदूत साहिबा ने बताया कि उनकी हज़ूर-ए-अनवर से 2008 में घाना में मुलाकात हुई थी जब हज़ूर ने सैकड़ों साल की खिलाफ़त की जयंती के लिए घाना का दौरा किया था।

हज़ूर-ए-अनवर ने घाना की अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए कुछ विशेष तरीकों का जिक्र किया। हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि आपको घाना के उत्तरी क्षेत्रों में शीया बटर की खेती करनी चाहिए। आप इससे साबुन और तेल बना सकते हैं। यह आय का स्रोत बन सकता है। "यदि मैं वहाँ होता तो मैं आपको दिखा सकता था कि इसे कैसे करना है। शीया बटर एक आय उत्पन्न करने वाली फसल है। लोग इसे पश्चिम में पसंद करते हैं। इसलिए अपनी ज़मीन पर खेती करें और निवेशकों से कहें कि वहाँ शीया बटर की खेती करें, पुरानी पारंपरिक फसलों को छोड़ दें। आमतौर पर आप चावल आदि उगाते हैं, जो आपके लिए लाभकारी नहीं होगा। आपको केवल मिज़ी और शीया बटर की नई किस्मों के लिए निवेश की आवश्यकता है, जो पहले से तैयार हो चुकी हैं।"

हज़ूर-ए-अनवर के पूछने पर वित्त अधिकारी ने बताया कि उनका अपना फार्म एक हजार एकड़ का है। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि "पांच सौ एकड़ शीया बटर की खेती के लिए इस्तेमाल करें।" हज़ूर-ए-अनवर ने कहा, "यदि आप ऐसा करेंगी, तो जब मैं अगली बार घाना आऊँगा तो मैं व्यक्तिगत रूप से इस फार्म का दौरा करूंगा।"

हज़ूर-ए-अनवर ने कहा, "घाना को पूरी दुनिया के लिए एक प्रमुख निर्यातक देश होना चाहिए और इसे पश्चिम पर निर्भर नहीं होना चाहिए। बजाय इसके कि आप खुद दूसरे देशों से मदद लें, आप दूसरे गरीब देशों की मदद करने वाले बन जाएँ।"

हज़ूर-ए-अनवर ने कहा, "आप मेरा सलाह अपने देश के राष्ट्रपति तक पहुँचाएँ। उन्हें मेरी ओर से यह संदेश पहुँचाएँ कि मेरी इच्छा है कि उनके कार्यकाल में घाना अफ्रीका का सबसे अमीर देश बने।" इस पर राजदूत साहिबा ने कहा कि वह चाहती हैं कि घाना हज़ूर-ए-अनवर के सलाह पर अमल करे। हज़ूर-ए-अनवर द्वारा घाना की कृषि अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए दिए गए सुझाव हमारे लिए एक वास्तविक सम्मान हैं।

मुलाकात के अंत में हज़ूर-ए-अनवर ने राजदूत साहिबा को क़ुरान करीम अपने हस्ताक्षरों के साथ दी। राजदूत साहिबा ने हज़ूर-ए-अनवर को घाना का पारंपरिक स्कार्फ उपहार में दिया और हज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर खींचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

बाद में राजदूत साहिबा ने हज़ूर-ए-अनवर से हाथ उठाकर दुआ कराने की निवेदन किया, जिस पर हज़ूर-ए-अनवर ने दुआ करवाई।

परिवारिक मुलाकातें

यह मुलाकात ग्यारह बजकर 25 मिनट पर खत्म हुई। इसके बाद हज़ूर अनवर अपने कार्यालय में आए, जहाँ कार्यक्रम के अनुसार परिवारों की मुलाकात का कार्यक्रम शुरू हुआ।

आज सुबह के इस सत्र में 32 परिवारों के 151 व्यक्तियों ने अपने प्यारे आक़ा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। हर एक ने हज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का भी सम्मान पाया। हज़ूर अनवर ने शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम भेंट की और छोटी उम्र के बच्चों और लड़कियों को चॉकलेट दी।

आज मिलने वाले ये लोग और परिवार स्थानीय जमाअत मेरीलैंड के अलावा अन्य पंद्रह जमाअतों और क्षेत्रों से आए थे। जिनमें लॉन्ग आइलैंड, न्यूयॉर्क, सेंट्रल जर्सी, ब्रुकलिन, बाल्टीमोर, नॉर्थ वर्जिनिया, लेहाई वैली, डलास, विलिंगबरो, यॉर्क, साउथ वर्जिनिया, क्लीवलैंड, डेटन, कनेक्टिकट और चार्लोट शामिल हैं।

अहबाब जमाअत के तासुरात

इनमें से कुछ अहबाब और परिवार लंबी दूरी तय करके आए थे। क्लीवलैंड से आने वाले 362 मील, चार्लोट से आने वाले 422 मील और डेटन से आने वाले 479 मील का फासला तय करके आए थे। जबकि डलास से आने वाले 1342 मील का सफर तय करके अपने प्यारे आक़ा से मिलने के लिए पहुंचे थे। आज भी मिलने वालों में से कई अहबाब और परिवार ऐसे थे कि उनके जीवन में हज़ूर अनवर से यह पहली मुलाकात थी।

एक दोस्त सैयद इमरान अहमद, जो सेंट्रल जर्सी से आए थे, कहने लगे कि "मेरी हज़ूर अनवर से कभी मुलाकात नहीं हुई थी। यह मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाकात थी। बस मैं तो हज़ूर अनवर के नूरानी चेहरे को देखता रहा। हज़ूर ने हमारी बेटियों के लिए दुआ की।"

एक दोस्त हिबा अल्लाह वाहला साहिब, जो जमाअत मेरीलैंड से आए थे, कहने लगे कि "आज की मुलाकात हमारे लिए एक अत्यंत असाधारण थी। मेरे दिल में ख्वाहिश थी कि हज़ूर मेरे साथ पंजाबी में बात करें, लेकिन मैंने जाहिर नहीं किया। जब मैं दफ्तर में दाखिल हुआ तो हज़ूर मेरे साथ खुद ही पंजाबी में बोलने लगे। इस पर मैंने अर्ज किया कि 'हज़ूर, आपने तो मेरे बताए बिना ही मेरी ख्वाहिश पूरी कर दी।' फिर मैंने अपने बेटे को मुलाकात से पहले मना किया था कि तुम हज़ूर के बिल्कुल करीब नहीं जाना, बल्कि कुछ दूरी पर रहना। हज़ूर ने मेरे बेटे से खुद कहा कि 'मेरे करीब आओ और फोटो लो।' खुद अपने पास खड़ा कर लिया। जब हम बाहर जाने लगे तो हज़ूर ने दोनों बच्चों को वापस बुलाया और कहा 'तुम दोनों पढ़ते हो, तो कलम भी ले लो।' यह मुलाकात हमें सारी ज़िंदगी याद रहेगी।"

मद्थर नज़र्चीमा साहब, जो जमाअत बाल्टीमोर से आए थे, कहने लगे कि "आज हम पर अल्लाह तआला का खास फ़ज़ल और एहसान है कि हमने मुलाकात की सआदत पाई। मैंने आज तक पूरी ज़िंदगी में हज़ूर अनवर जैसा नूरानी चेहरा और शफ़ीक इंसान नहीं देखा। मुझे तो ऐसा लगा कि एक तरफ से मृत शरीर अंदर गया और दूसरी तरफ से आध्यात्मिक जीवन मिल गया। ये दो-तीन मिनट मेरी सारी जिंदगी के बेहतरीन, सबसे उम्दा और सबसे अच्छे लम्हात थे। उनकी पत्नी तो रोने लगी थीं और कहने लगीं कि 'हज़ूर की शख्सियत में तो इंसान खो जाता है। एक दूसरी दुनिया में चला जाता है। मैं तो वर्णन ही नहीं कर सकती।'"

एक दोस्त कयूम नासिर साहब, जो बाल्टीमोर से आए थे, कहने लगे कि "मेरी तो मुलाकात अभी नहीं होनी थी। मुझे आज ही पता चला है कि मेरी मुलाकात है। मैं तो पंद्रह घंटे कल पूरी रात और आज सुबह सेवा-ए-खलक की ड्यूटी करता रहा। फिर थोड़ी देर के लिए सो गया था। फोन करते रहे, लेकिन मैं सोने के कारण फोन नहीं उठा रहा था। आखिर किसी ने मुझे ढूंढ लिया और मुझे मस्जिद ले आए। मैं बहुत ही खुशकिस्मत, खुश नसीब हूँ कि मेरी प्यारे आक़ा से मुलाकात हो गई। खुदाई तक़दीर ही थी कि ढूंढने वालों ने मुझे ढूंढ लिया।"

एक दोस्त नासिर अहमद साहब, जो जमाअत डेटन से आए थे, कहने लगे कि "यह मेरी जिंदगी की पहली मुलाकात थी। मेरी पत्नी एक इंडोनेशियाई नौ-मुबाईन है। उनकी पत्नी कहने लगीं कि 'हज़ूर अनवर से मुलाकात एक ख्वाब लगता है। मुझे इतनी खुशी हो रही है कि मैं बयान नहीं कर सकती। मुझे तो मेरी कई महीनों की दुआ का फल मिला है। मैं पिछले कई महीनों से दुआ कर रही थी कि 'हे अल्लाह, हमारी खलीफा-ए-वक्त से मुलाकात करवा दे।' आज अल्लाह ने हमारी दुआ सुन ली।"

शेष ..

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यद-हुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्ज़ेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

10 अक्टूबर 2022

मस्जिद बैतुल् रहमान के सामने खरीदी गई एक इमारत का निरीक्षण

मज्लिस खुद्दामुल् अहमदिय के कार्यालयों, सराय-ए-खिदमत का उद्घाटन और निरीक्षण, तथा पारिवारिक मुलाकातें

मेरी जिंदगी में सिर्फ एक ही ख्वाहिश थी, और मैं अल्लाह से यही दुआ करता था कि हे अल्लाह, मुझे मेरे प्यारे से मुलाकात करवा दे। आज अल्लाह ने मेरी दुआ कुबूल कर ली। मेरा दिल सुकून से भर गया।

मैं बहुत खुशनसीब हूँ। इस मुलाकात के लम्हे को मैं पूरी जिंदगी याद रखूंगा और इसे दिल के करीब रखूंगा।

आज की मुलाकात हमारे लिए हमारी पूरी जिंदगी की जमा पूंजी है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने सुबह छह बजकर पंद्रह मिनट पर "मस्जिद बैतुल् रहमान" में तशरीफ़ लाकर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ अपने क़यामगाह पर वापस तशरीफ़ ले गए।

सुबह के वक्त, हज़ूर-ए-अनवर ने अपने कार्यालय की डाक देखी, आवश्यक हिदायतें दीं और विभिन्न प्रकार के दफ्तर के मामलों की अदायगी में व्यस्त रहे।

मस्जिद बैतुल् रहमान के सामने खरीदी गई इमारत का निरीक्षण

कार्यक्रम के मुताबिक, दोपहर एक बजे हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ अपने क़यामगाह से बाहर तशरीफ़ लाए। जमाअत अमेरिका ने मस्जिद बैतुल् रहमान के सामने एक इमारत को छह लाख डॉलर में खरीदा है। इस ज़मीन का कुल रकबा 4 एकड़ है। इस इमारत की मरम्मत कर इसे गेस्ट हाउस के रूप में तैयार किया गया है। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने इस इमारत का मुआइना करने के लिए तशरीफ़ ले गए। यह इमारत एक सिटिंग रूम, डाइनिंग रूम, किचन और चार बेडरूम्स पर आधारित है, जिसमें तीन बाथरूम और अन्य सभी आवश्यक सुविधाएं भी मौजूद हैं। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने इमारत के विभिन्न हिस्सों का निरीक्षण किया और इसके नवीनीकरण के संबंध में सेक्रेटरी जायदाद से जानकारी प्राप्त की। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने इमारत के बाहरी हिस्से के डेक पर भी तशरीफ़ लाकर इस घर की सीमा के बारे में जानकारी ली। जायदाद विभाग की टीम गेस्ट हाउस के बाहर खड़ी थी, और हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने उनके साथ भी बात की।

इस इमारत के पास ही एक और मकान है, जिसे जमाअत ने 2018 में खरीदा था। वर्तमान में, मुख़्तार अहमद मल्ही साहिब, नेशनल जनरल सेक्रेटरी जमाअत यूएसए, इस घर में रहते हैं। उन्होंने हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ की सेवा में निवेदन किया कि इस गेस्ट हाउस के पास मेरा घर है, हज़ूर कुछ देर के लिए तशरीफ़ लाकर बर्कत दें। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने यह पूछते हुए तशरीफ़ लाने की स्वीकृति दी कि यह घर भी जमाअत की ही मिल्कियत है। मुख़्तार साहिब ने पुष्टि की कि यह घर जमाअत द्वारा 2018 में खरीदा गया था। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ तशरीफ़ लाकर इस घर के विभिन्न हिस्सों का मुआइना किया और खुशी ज़ाहिर की। इसके बाद परिवार ने हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिंचवाने की सौभाग्य प्राप्त की।

बाहर आते वक्त, नेशनल सेक्रेटरी जायदाद, नियाज़ बट साहिब ने बताया कि जमाअत इस घर के पास एक बड़ा स्टोरेज बनाना चाहती है। इस घर की ज़मीन का रकबा 2.2 एकड़ है, जिससे इन दोनों ज़मीनों को मिलाकर जमाअत के पास कुल 6.2 एकड़ की मिल्कियत हो जाएगी।

"सराय-ए-खिदमत" का निरीक्षण

मज्लिस खुद्दामुल् अहमदिय अमेरिका ने अपने केंद्रीय कार्यालयों के लिए मस्जिद बैतुल् रहमान से आधे मील की दूरी पर एक प्रॉपर्टी पाँच लाख डॉलर में खरीदी है, जिसे "सराय-ए-खिदमत" नाम दिया गया है। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने सराय-ए-खिदमत के निरीक्षण के लिए तशरीफ़ लाकर इस नई इमारत का जायज़ा लिया।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ एक बजकर बीस मिनट पर "सराय-ए-खिदमत" पहुंचे। वहां, सदर खुद्दामुल् अहमदिय और उनकी आमला के सदस्यगणों ने हज़ूर का स्वागत किया। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने सराय-ए-खिदमत की बाहरी दीवार पर लगी पट्टिका का अनावरण किया और दुआ करवाई। इसके बाद हज़ूर ने इमारत का निरीक्षण किया। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने लिविंग रूम, डाइनिंग रूम और किचन का भी मुआइना किया। घर के पिछले हिस्से में, हज़ूर डेक पर तशरीफ लाए और सदर साहिब से ज़मीन के रकबे के बारे में जानकारी ली। सदर साहिब ने बताया कि यह ज़मीन लगभग आधे एकड़ की है।

इसके बाद हज़ूर ने लाइब्रेरी और कॉन्फ्रेंस रूम का निरीक्षण किया। बताया गया कि पहले यह कॉन्फ्रेंस रूम एक गैराज था, जिसे नवीनीकरण के बाद कॉन्फ्रेंस रूम में तब्दील किया गया। कॉन्फ्रेंस रूम में रिफ्रेशमेंट की व्यवस्था थी, और हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने प्यार से एक प्लेट में से कुछ खाकर बरकत प्रदान की। इसके बाद हज़ूर पहली मंज़िल पर गए, जहां दो दफ्तर और दो बेडरूम तैयार किए गए थे। ऊपर के हिस्से में दो बाथरूम भी हैं, और ग्राउंड फ्लोर पर भी दो बाथरूम हैं। इस घर के बेसमेंट में एक जिम और एक गेम रूम भी शामिल है।

निरीक्षण के बाद जब हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ इमारत से बाहर आए, तो पास में रहने वाली एक अमेरिकन महिला ने स्वागत किया। उसने हज़ूर का अभिवादन किया। हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने उससे पूछा, "क्या हम अच्छे पड़ोसी हैं?" इस पर उसने जवाब दिया, "आप लोग बहुत अच्छे पड़ोसी हैं।" हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने उसकी ज़मीन के आकार के बारे में पूछा, जिस पर उसने बताया कि उसकी ज़मीन भी आधे एकड़ की है। महिला ने खदाम से कहा था कि आज आपके लिए बहुत खुशी का दिन है, आपके खलीफा आ रहे हैं। हमारे घर का ड्राइववे आज खाली है, आप इसे बेझिझक इस्तेमाल कर सकते हैं। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने महिला का धन्यवाद किया और फिर मस्जिद बैतुल् रहमान के लिए रवाना हो गए।

एक बजकर तीस मिनट पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुल् रहमान में आकर नमाज़े ज़ुहर और असर को जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ अपनी निवास स्थान पर चले गए।

परिवारिक मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार, शाम छह बजे हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और परिवारों की मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू हुआ। आज शाम के इस सत्र में 27 परिवारों के 121 व्यक्तियों ने अपने प्यारे आका

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 14 November 2024 Issue No. 46

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। सभी मित्रों और परिवारों ने हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खींचवाने का सौभाग्य पाया। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने विद्यार्थियों को कलम और छोटे बच्चों को चॉकलेट देकर अनुग्रहित किया।

आज मैरीलैंड (Maryland) की स्थानीय जमाअत के अलावा यॉर्क, साउथ वर्जीनिया, नॉर्थ जर्सी, ब्रुकलिन, बफेलो, विल्मिंगबोरो, नॉर्थ वर्जीनिया, आल्बनी, लॉन्ग आईलैंड, बिंघमटन, मैरिसबर्ग और बाल्टीमोर की जमाअतों और क्षेत्रों से परिवार मुलाकात के लिए आए थे। आल्बनी और बफेलो से आने वाले परिवार छह से सात घंटे की यात्रा करके पहुंचे थे।

अहबाब जमाअत के तासुरात

आज के मुलाकात के कार्यक्रम में कई ऐसे परिवार थे जिनकी खलीफा-ए-मसीह से यह पहली मुलाकात थी। हर एक की अपनी अनुभूतियाँ थीं, अपने भाव थे, कुछ बयान करने की हिम्मत और सामर्थ्य पाते थे, कुछ नहीं पाते थे।

नासिर इकबाल साहब जमाअत हैरिसबर्ग से परिवार के साथ मुलाकात के लिए आए थे। बात करते-करते वह रोने लगे और कहने लगे कि मैं मुलाकात का हाल बयान नहीं कर सकता। मुलाकात से पहले मैंने सोचा था कि मैं हज़ूर से यह यह बात करूंगा, लेकिन अंदर जाकर सब कुछ भूल गया। आज मुझे इतनी खुशी है कि मैं बयान नहीं कर सकता। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने मेरे बच्चों के लिए दुआ की है।

अदनान अहमद साहब जमाअत साउथ वर्जीनिया से आए थे। उनकी पत्नी रोने लगीं। उन्होंने कहा कि मैंने अपनी आँखों से हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ के चेहरे पर रोशनी और नूर की किरणें निकलती देखी हैं। हमने कहा, "हज़ूर! हम आपसे उदास हो गए थे," तो हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया : "आप फिर मिलने क्यों नहीं आए थे?"

एक महिला राजिया अहमद साहिबा नॉर्थ जर्सी जमाअत से आई थीं। यह भी रोने लगीं। उन्होंने कहा कि मैंने 2014 में बैअत की थी लेकिन आज तक मेरी किसी भी खलीफा से मुलाकात नहीं हुई थी। यह मेरी जिंदगी की पहली मुलाकात थी। मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ। हज़ूर-ए-अनवर ने अत्यंत स्नेह का प्रदर्शन किया और मुझे तबरक के तौर पर अंगूठी भी दी।

मलिक अज़हर महमूद साहब जमाअत मैरीलैंड से आए थे। यह एक बुजुर्ग व्यक्ति थे। छड़ी के सहारे चलते थे और चलने में कठिनाई होती थी। यह रोने लगे और उनसे बात नहीं हो रही थी। कहने लगे कि मेरी जिंदगी की सिर्फ एक ही इच्छा थी और मैं अल्लाह तआला से दुआ करता था कि "हे अल्लाह, मुझे जिंदगी में मेरे प्यारे से मुलाकात करवा दे।" आज अल्लाह ने मेरी दुआ कबूल कर ली। मेरा दिल सुकून से भर गया। अब मेरी जिंदगी में और कोई इच्छा बाकी नहीं रही। अब जिंदगी में और कुछ नहीं रह गया।

एक गाम्बियन दोस्त अलनाय नयांगाडो साहब मैरीलैंड से आए थे। उनकी आँखों में आँसू थे। बार-बार कहते जा रहे थे कि हज़ूर-ए-अनवर को कैसे पता था कि मैं गाम्बिया से हूँ। हज़ूर ने मुझे और मेरे परिवार को दुआएं दीं। अब मुझे और क्या चाहिए।

एक दोस्त इबाद उसमान अहमद साहब ने अपने तासुरात का इज़हार करते हुए कहा कि जब मैं दफ्तर में दाखिल हुआ तो मेरा सारा शरीर कांपने लगा। मैं बहुत खुशकिस्मत था। मैं इस मुलाकात के पल को जिंदगी भर याद रखूंगा और दिल के करीब रखूंगा।

इर्फान मलिक साहब जमाअत साउथ वर्जीनिया से आए थे। कहने लगे हज़ूर-ए-अनवर के चेहरे पर एक नूर था। मैंने इतना नूर कभी नहीं देखा। मेरी बेटी अंधी है। हज़ूर ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला इन शा अल्लाह बहुत फ़ज़्ल करेगा।" हज़ूर-ए-अनवर ने स्नेह से उसकी आँखों पर अपनी अंगूठी रखी। अब हमें अल्लाह तआला से उम्मीद है कि वह इसके लिए बहुत बेहतर करेगा।

एक दोस्त मुबाशिर अहमद साहब जमाअत बफेलो से आए थे। मुलाकात के बाद कहने लगे कि कुछ बयान ही नहीं किया जा सकता, शब्दों में ढालना नामुमकिन है। आज की मुलाकात हमारे लिए, हमारी सारी जिंदगी की जमा पूंजी है। हज़ूर-ए-अनवर ने बेटियों की शिक्षा के लिए मार्गदर्शन दिया और फ़रमाया, "इस इस फील्ड में जाओ और खिदमते खलक करो।"

एक दोस्त उमैर अहमद साहब जो नॉर्थ वर्जीनिया जमाअत से आए थे। कहने लगे कि आज हज़ूर-ए-अनवर से हमारी जिंदगी की पहली मुलाकात थी। आज का यह पल मेरे लिए एक नाकाबिल-ए-यकीन पल है।

महतरमा मंसूरा हमायूँ साहिबा जो कि मैरीलैंड जमाअत से आई थीं, मुलाकात के बाद रोने लगीं। कहने लगीं कि मेरा दुख दूर हो गया है। मैंने देखा कि बस मेरे पिता मेरे सामने बैठे हुए हैं। मेरे पिता की वफात पंद्रह बीस दिन पहले हुई थी। मैं ग़मज़दा थी। हज़ूर को मिलते ही सारा ग़म दूर हो गया। अब मुझे सुकून महसूस होता है। बारह साल पहले मेरे भाई को शहीद किया गया था। पिता इसी परेशानी में अपनी बाकी जिंदगी बिताते रहे। लेकिन आज हमें सुकून मिल गया है। मेरे लिए यह ऐसा पल है कि मुझे हमेशा इसकी याद आएगी।

एक दोस्त लईक अहमद रिजवान साहब ने कहा कि मुलाकात का नज़ारा बहुत प्यारा था। हमारे सामने एक चमकता हुआ चाँद था और हमारी नज़रें झुकी हुई थीं।

एक दोस्त सुहैल अहमद अलादीन साहब कहने लगे कि यह मेरी जिंदगी की पहली मुलाकात थी। खुशी इतनी हो रही है कि मुझसे बोला नहीं जा रहा। हम हैदराबाद दकन से हैं।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम आठ बजकर दस मिनट तक जारी रहा।

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने साढ़े आठ बजे मस्जिद बैतुल् रहमान में आकर नमाज़-ए-मग़रिब और इशा को जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ अपनी निवास पर चले गए।

11 अक्टूबर 2022

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने सुबह सवा छह बजे "मस्जिद बैतुल् रहमान" में आकर नमाज़ फज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अपनी निवास स्थान पर चले गए।

अमेरिका में तैनात घाना की राजदूत की मुलाकात

सुबह हज़ूर-ए-अनवर ने दफ्तर की डाक का मुआइना किया और विभिन्न दफ्तर के मामलों में व्यस्त रहे। कार्यक्रम के अनुसार सुबह ग्यारह बजे हज़ूर-ए-अनवर मीटिंग रूम में आए, जहाँ अमेरिका में घाना की राजदूत हाजिया आलमिया महामा साहिबा हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात के लिए आई थीं।

उनके साथ मुलाकात में वित्त अधिकारी ऐसिटू शानी साहिबा और काउंसलर अधिकारी अमिदु मोहम्मद करांडे साहब भी शामिल थे। हज़ूर-ए-अनवर ने घाना के विभिन्न क्षेत्रों में अपने ठहरने के बारे में बताया और कहा कि जब 1970 और 80 के दशक में मेरा वहाँ ठहराव था, तब सड़कों और बुनियादी ढांचे की स्थिति अच्छी नहीं थी। क्या अब इसमें सुधार हुआ है? हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि यदि राजनेताओं को एहसास हो जाए कि उन्हें अपनी कौम और अपने लोगों की सेवा करनी है, तो हालात बेहतर होंगे। हज़ूर-ए-अनवर ने राजदूत से कहा कि आप यहाँ अमेरिका में भी देश की बेहतरी के लिए अपनी भूमिका निभा सकती हैं।

घाना की अर्थव्यवस्था और आर्थिक स्थिति के बारे में हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि घाना को निवेशकों को आकर्षित करने की आवश्यकता है। घाना में संभावनाएँ मौजूद हैं। इसे सिर्फ संभावनाओं के सभी रास्तों का उपयोग करने की आवश्यकता है।

हज़ूर-ए-अनवर ने कहा, "मुझे यकीन है कि घाना विकसित हो सकता है और पूरे अफ्रीका में एक प्रमुख देश बन सकता है। आपको अपनी सड़कों को बेहतर बनाकर बुनियादी ढांचे में सुधार करना चाहिए। आपका देश एक कृषि प्रधान देश है। किसानों की उत्पादन मार्केट में आनी चाहिए। इसके लिए आपको सड़कों और परिवहन की सुविधाओं की आवश्यकता है।"

शेष पृष्ठ 10 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad